समाज विकास

मूल्य : १० रुपये प्रति, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR
1935-2010

▸ अप्रैल २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०४

अखिल भारतीय समिति की बैठक

28 मार्च 2010 जमशेदपुर

आतिथ्य

कोल्हान प्रमंडल झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन, साकची शाखा

''सहयोग एवं समन्वय के साथ समाज और राष्ट्र का निर्माण''

– सम्मेलन सभापति नन्दलाल रुँगटा

- डॉ0 राम मनोहर लोहिया एवं श्री घनश्यामदास बिड़ला को मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किया जाये।

–विनय सरावगी, अध्यक्ष झारखण्ड प्रान्तीय सम्मेलन

- कौस्तुभ जयंती वर्ष में सम्मेलन के नये 7500 सदस्य बनाये जायें।

– कमल नोपानी, अध्यक्ष, बिहार प्रान्तीय सम्मेलन

- मारवाड़ी सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच को मिलकर कार्य करने की जरूरत है।

–पुष्पा चोपड़ा, पूर्व अध्यक्ष, महिला सम्मेलन

- कौस्तुभ जयंती कार्यक्रमों की सफलता में प्रान्तीय सम्मेलनों का महत्वपूर्ण योगदान।

– रामअवतार पोद्दार, रा. महामंत्री

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦अप्रैल २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ४ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है :	५
आई.पी.एल : भारतीय इतिहास का शर्मनाक अध्याय – शम्भु चौधरी	६
लोहिया के विचारों से प्रेरणा लें समाज – नन्दलाल रूँगटा	७
''केवल मनुष्य ही हंस सकता है'' – **'हास्योज्ज्वला'** – सीताराम शर्मा	८–९
अखिल भारतीय समिति की बैठक	१०–१३
अपनी मातृभूमि की ओर भी ध्यान दे प्रवासी समाज – संजय हरलालका	१४–१५
रामजन्म का पावन पर्व है रामनवमी – त्रिलोकीदास खण्डेलवाल	१६–१७
समाज संगठन के बारे में वर्तमान.....– श्री रामनिवास लखोटिया	१८
सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्यों की सूची	१९
बहुमुखी प्रतिभा के धनीं कविवर ताऊ शेखावाटी	२०
रूपकुंवर ज्योति प्रसाद अगरवाला की तीन कविता	२१
सम्मेलन के नये आजीवन एवं विशिष्ट सदस्यों की सूची	२३–२४
मारवाड़ी सम्मेलन का प्रथम ऐतिहासिक अधिवेशन – ओंकार पारीक	२५–२८
लोक–उद्धारक भगवान् महावीर – हनुमान सरावगी	२९–३०
राजस्थानी रै बिना क्यांरो राजस्थान – डॉ. मदन गोपाल लढ़ा	३१–३२
हार की जीत : सुदर्शन की कहानी	३३–३४
युगपथ चरण :	
श्री श्याम मंदिर स्थल (आलमबाजार) से निकाली गई भव्य शोभायात्रा	३५
बोर्ड के सदस्य मनोनीत – श्री बंशीलाल बाहेती	३५
बिहार सम्मेलन द्वारा ७८०० सौ कम्बल का वितरण किया गया	३५
कानपुर शाखा द्वारा प्रकाशित मारवाड़ी पंचाग पत्रिका	३६
अरुण राट्रीय जेसीआई एवार्ड से सम्मानित	३६
होजाई शाखा बौद्धिक विकास एवं खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित	३७
राजस्थान परिषद ने धूम–धाम से मनाया राजस्थान दिवस	३८

2010–2011 में राष्ट्रीय जनगणना

वर्ष 2010–2011 में राष्ट्रीय जनगणना शुरु हो चुकी है। मारवाड़ी समाज इस जनगणना में अपनी मातृभाषा के स्थान पर 'राजस्थानी' लिखना न भूलें। शाखासभाओं से भी अनुरोध है कि वे इस सूचना को समाज तक पहुचाने में हमारी मदद करें।– सभापति

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

चिट्ठी आई है :

2010–2011 में राष्ट्रीय जनगणना

वर्ष 2010–2011 में राष्ट्रीय जनगणना शुरु हो चुकी है। मारवाड़ी समाज इस जनगणना में अपनी मातृभाषा के स्थान पर 'राजस्थानी' लिखना न भूलें। शाखासभाओं से भी अनुरोध है कि वे इस सूचना को समाज तक पहुचाने में हमारी मदद करें।– सभापति

अनजाने में भयंकर भूल

विवाह तिलक आदि मांगलिक अवसरों पर हम अपनी क्षमता के अनुसार बड़े ही कीमती आमंत्रण पत्र छपाते हैं। ऐसे पत्रों का एक मात्र उद्देश्य समारोह की सूचना देना और जिसके नाम से पत्र भेजते हैं उसे सादर आमंत्रित करना होता है। हम कीमती पत्रों को अपने आर्थिक एवं सामाजिक स्तर से जोड़ लेते हैं। कीमती आमंत्रण भेजने से एक प्रकार के मिथ्या अहम् की संतुष्टि होती है। हर आमंत्रण के लिफाफे पर भगवान गणेश, राम–सीता, शिव–पार्वती या राधा–कृण के चित्र होते हैं।

जब यह आमंत्रण पत्र किसी के पास जाता है, तो वह भारतीय संस्कृति के प्राण आधार वाले चित्र छपे लिफाफे को फाड़कर या तो फेंक देता है या फिर रद्दी की टोकरी में डाल देता है। इस दारुण स्थिति को देखकर हमारे मानस में यह विचार क्यों नहीं उठता है कि जिन ईष्ट देवों पर हमारा समस्त धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधार टिका हुआ है, उनके चित्रों की ऐसी भयावह दुगर्ति पर हम विचार क्यों नहीं करते हैं? कीमती देवी–देवताओं के चित्रों के कार्डों को नदी में बहाना पड़ता है, जो गैरकानूनी है। अजीब स्थिति बनती है उस कार्ड की। यह हमारा घोर सांस्कृतिक पतन है और इसकी जिम्मेदारी हम पर आती है।

साधारण कार्ड छपवाकर उसके साथ हनुमान चालिसा, गीता, रामायण, भागवत आदि पर विवाह उपलक्ष में भेंट का पृष्ठ छपवाकर निमंत्रण के साथ भेजा जाय तो धर्म का प्रचार भी होगा और देवी–देवताओं के प्रति आस्था भी। निमंत्रण पत्रों को खोलने के लिए भगवान गणेश, स्वास्तिक या ॐ की गोल चिप्पी (स्टीकर) लागाई जाती है। आमंत्रण पत्र देखने के पहले इसी चिप्पी को फाड़ना पड़ता है क्योंकि और कोई विकल्प नहीं है, यह अमांगलिक है। क्यों न साधारण गोल चिप्पी (स्टीकर) छपवाकर लिफाफे पर चिपकाई जाय। यह ऐसी भंयकर भूल है जिसे हम अनजान बनकर बार–बार दुहराते हैं।

– पुष्करलाल केड़िया, कोलकाता

शिव तो सांप पाल राख्यो थो

शंभु चौधरी रो व्यंग्य लेख–शिव तो सांप पाल राख्यो थो यो शेर कठै सूं आगो आज री विघटन कारी शक्तियों पर एक करारी चोट है। दूजो व्यंग्य लड़ना चुनाव सभापति का आज री सामाजिक और राजनैतिक विसंगतियों पर करारो प्रभाव है। समाज की खबरा सागै साहित्यिक स्वरूप सरावबाजोग है।

– नागराज शर्मा, पिलानी

जुलाई अंक हेतु

जुलाई माह के अंक में मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित संस्थाओं जैसे धर्मशाला, चिकित्सालय, पुस्तकालय, व्यायामशाला, विवाह भवन, स्कूल, कॉलेज आदि की सूचि प्रकाशित की जायेगी। आपसे विनम्र निवेदन है कि कृपया आप इस कार्य में हमें सहयोग कर अपने गांव/शहर की तमाम जानकारी फोटो, सम्पर्क, पता आदि ३० जून २०१० तक भिजवाने की कष्ट करेंगे।

– सम्पादक

अपनी बात :

आई.पी.एल : भारतीय इतिहास का शर्मनाक अध्याय

– शम्भु चौधरी

दिल्ली की गर्मी ज्यूँ–ज्यूँ सर चढ़कर बोलने लगी, वैसे–वैसे ही संसद के गलियारे में ***IPL*** का डेंगु बुखार अपनी हदें पार करता गया। शायद देश के लिये खेलने वाले खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों की भावना के साथ इससे गंदा मजाक दूसरा नहीं हो सकता। जैसे–जैसे एक झूठ को दबाने के लिये दूसरा झूठ बोला गया परत दर परत उतरती गई। मंत्री से लेकर संत्री तक एक दूसरे को बचाने के काम में शामिल दिखे। मानो कोई भूचाल आने वाला हो। हकीकत क्या है यह तो इनका ईमान ही जानता है। ***IPL*** खेल न होकर खेल का एक मैदान हो गया हो। खेल के मैदान में भारतीय राजनीति का इससे गंदा चरित्र शायद ही कभी देखने को मिला होगा। मैदान में या तो **'चीयरगर्ल'** ने अपनी जगह बना ली हो या राजनैतिक चरित्र के पतन ने। खिलाड़ियों को अब खेल की हार जीत से कोई फर्क नहीं पड़ता। खेल की हार जीत से फर्क पड़ता है सिर्फ और सिर्फ उन सौदागरों को जिन्होंने खेल के मैदान को कौड़ी के भाव खरीद लिया है। देश की जनभावना को मजाक बना देने वाले इन गुनाहगारों के साथ एक के बाद एक मंत्री का नाम जुड़ते जाने से देश सकते में आ गया।

BCCI **की प्राथमिकता समाप्त कर खेल जगत में भी एक रेगुलेटरी बना दी जानी चाहिये, जहाँ न सिर्फ क्रिकेट का खेल हो सके क्रिकेट के खेल से होनी वाली आमदनी से देश के अन्य खेलों को भी नया जीवन दिया जा सके। – शम्भु चौधरी**

संसद में जब विपक्ष एक स्वर में **'जेपीसी'** की मांग कर रहा था तो शायद संसद को उस दिन की बात याद आ गई जब देश में **हर्षद मेहता** का सबसे बड़ा शेयर घोटाला सामने आया था। उसके क्या परिणाम सामने आये ये तो पता नहीं, हाँ! सरकार ने उस समय जो सरकारी संस्था शेयर बजार को देखने का कार्य करती थी उसकी जगह **'सेबी'** का पुन: गठन कर अपनी कमजोरी को छुपाती नजर आयी। देश के इतिहास के इस शर्मनाक अध्याय को छुपाने का नाम होगा – **'जेपीसी'**।

दिल्ली भले ही इस बात को नमक–तेल के भाव की तरह लेती हो, भले ही देश में खेल के नाम पर नकली बोली का नाटक मंचन किया जाता हो। पारदर्शिता के नाम पर वे सभी बातें आपस में पहले से तय कर ली जाती हो कि किसे सौदा दिया जाना है और कितने में सौदा किया जाना है यह बात उस समय सामने आ जाती है जब सौदा बोलाने वाली एजेन्सी वे सभी बातें अपने मंत्री को हस्तांतरण कर देती है जो कानूनन अवैध माना जायेगा।

जब सरकार के दामन में आग लगने लगी तो सरकार ने आयकर विभाग को सचेत कर दिया। सवाल उठता है कि क्या ये सौदे सरकार की नजर से बहार हो रहे थे? इतनी दामी–दामी टिकटें बेची जा रही थीं, मुँह मांगी कीमतों पर टिकटें बिक रही थी तो क्या सरकार को पता नहीं था? क्या यह खेल कहीं किसी पांच–सितारा 'व्यापारिक–शो' का हिस्सा तो नहीं? यदि ऐसा है तो इन खिलाड़ियों को खेल के नाम पर दी जाने वाली वे तमाम सभी सुविधायें समाप्त कर क्यों न इनको भी **सर्विस–टैक्स** के दायरे में लाया जाय? ***BCCI*** की प्राथमिकता समाप्त कर खेल जगत में भी एक रेगुलेटरी बना दी जानी चाहिये, जहाँ न सिर्फ क्रिकेट का खेल हो सके क्रिकेट के खेल से होनी वाली आमदनी से देश के अन्य खेलों को भी नया जीवन दिया जा सके।

अन्त में देश के बचे–खुचे चन्द ईमानदार नेताओं से यह अनुरोध रहेगा कि वे **जेपीसी** का गठन करते वक्त दागदार नेताओं के प्रभाव से मुक्त होकर भारतीय खेल जगत को नया जीवन प्रदान करें और ***IPL*** जैसे शर्मनाक खेल को जड़ से समाप्त कर दें। खेल को व्यापारिक बनाना गलत नहीं है परन्तु खेल की आड़ में व्यापार करना देश की भावना से धोखा देना माना जायेगा। हमारा देश गरीबों के हृदय में बसता है। देश के नेता जिनको जो भार दिया गया है वे उस ओर ध्यान न देकर खेल जगत में राजनीति करना चाहते हों तो उन्हें अपना पद छोड़ देना चाहिए।◆

अध्यक्षीय :

लोहिया के विचारों से प्रेरणा लें समाज

– नन्दलाल रूँगटा, रा.अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

समाज के प्रेरणा पुरुष डॉ. राम मनोहर लोहिया जिनकी जन्म–शताब्दी इस वर्ष मनाई जा रही है आपने संसाधनों के बिना अपनी प्रतिभा के बल पर अपना मुकाम हासिल किया और राष्ट्र के निर्माण में अपना अतुलनीय योगदान दिया। लोहिया जी के विचार सर्वहारावाद से प्रभावित न कह कर यह कहा जा सकता है कि इन्होंने जिस तरह से समाजवाद को परिभाति किया, देखा जाय तो सच्चा समाजवाद इन्हीं का माना जायेगा और शायद समाजवाद को माननेवाले राजनैतिक कार्यकर्तागण समाजवाद की जगह 'लोहियावाद' से ज्यादा प्रभावित नजर आते हैं। छोटीसी आयु में ही लोहियावाद ने देश में अपना एक स्थान बना लिया था। संसद में इनके प्रवेश से ऐसा लगता था मानो एक साथ लाखों लोग संसद भवन में प्रवेश कर गये हों, लोहिया जी के संसद में प्रवेश के साथ ही देश के पशु–पक्षी चहकने लगते, किसान हल छोड़ कर रेडियो पर उनकी बातें सुनने लगते थे। मानो देश का सारा दर्द हर लिया हो इस इंसान ने। इनकी आवाज संसद से निकलकर गाँव के खलिहानों तक जाती थी। कपास मजदूर हो या रेल मजदूर, किसान हो या व्यापारी वे चाहते थे देश के सर्वांगीण विकास के लिए सभी वर्ग का समुचित विकास हो न कि चन्द राजनैतिक दलों की तिजौरी भरी जाये।

वर्ष 2010–2011 में राष्ट्रीय जनगणना शुरु हो चुकी है। मारवाड़ी समाज इस जनगणना में अपनी मातृभाषा के स्थान पर 'राजस्थानी' लिखना न भूलें।

इन दिनों मारवाड़ी समाज में राजनीति की बात चारों तरफ काफी तेजी से उठ रही है। जगह–जगह राजनैतिक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन बुलाकर समाज को राजनीति की तरफ ध्यान दिये जाने पर बल दिया जा रहा है। सम्मेलन जैसी संस्था जो एक समय राजनीति की बात से परहेज रखती थी, खुले तौर पर आज राजनैतिक कार्यकर्ताओं का सम्मेलन आयोजित कर रही है। इसके पीछे समाज की सोच में आये परिवर्तन को हम श्रेय देना चाहेंगे। मारवाड़ी समाज आजादी के समय राजनीति में गुप्तरूप से सक्रिय पाया जाता रहा, परन्तु आजादी के पश्चात इस समाज ने राजनीति को एक प्रकार से तिलांजलि ही दे दी थी। समाज में इक्का–दुक्का राजनीति कार्यकर्ता पाया तो जाता था पर उसे समाज का कोई समर्थन या आर्थिक सहयोग नहीं के बराबर मिलता था या यूँ कह लें उसे हंसी का पात्र माना जाता था, उससे पूछा जाता था कि– **"थे के काम करो हो?"** ऐसी बात नहीं थी कि समाज के समृद्धशाली लोग राजनीति में धन खर्च नहीं करते थे, उनका सीधा उद्देश्य व्यापारिक लाभ से होता था जो कद्दावर नेता होते थे, वे अपना धन उन्हीं के माध्यम से खर्च किया करते थे। यह सच्चाई है कि समाज ने राजनीति को सिर्फ अपने स्वार्थपूर्ति का माध्यम बना दिया था। जिसके कारण राजनीतिक लोग इस समाज को न सिर्फ मुनाफाखोर मानते थे, जब चाहा जी–भरकर गालियाँ भी देते रहे। जनता को गुमराह करने के लिये यदा–कदा व्यापारियों के गोदामों को सरकारी तंत्र के माध्यम से लूट भी लेते थे। कई प्रकार के बेतुके कानूनों के कारण व्यापारियों को कई बार जेल भी जाना पड़ा है।

आज समय बदला है, एक समय खुलेआम खुद को ईमानदार कहलाने वाले नेताओं के भ्रट कारनामे जगजाहिर होने लगे हैं। अब इनका मानना है कि देश में हर समाज की उपयोगिता है। वहीं मारवाड़ी समाज भी शिक्षित होकर सामने आया है। समाज में अब न सिर्फ व्यवसायी हैं, नौकरी–पेशा से जुड़े हुए लोग भी बड़ी संख्या में कार्यरत हैं। समाज के कार्य करने की पद्धति में भी काफी परिवर्तन देखा जा रहा है। एक समय दलाली या किराने की दुकान करने वाला व्यापारी आज कल–कारखाने लगा रहा है। विदेशी कारबार भी तेजी से बढ़ा है। वित्तिय कारोबार का सरकारीकरण होने के बाद भी मारवाड़ी समाज के युवकों ने उद्योग–धन्धे में काफी प्रगति की है।

यह तो नहीं लिखा जा सकता कि मारवाड़ी समाज का समस्त वर्ग लोहियावाद से प्रभावित रहा है। हाँ! यह बात जरूर है कि मारवाड़ी समाज को इस बात का फक्र जरूर है कि स्व. लोहिया एक मारवाड़ी थे। आज जब हम इनकी शताब्दी मना रहे हैं तो समाज से इतना जरूर अनुरोध रहेगा कि मारवाड़ी समाज इनके विचारों से प्रेरणा ग्रहण कर राजनीति में अपनी सक्रियता जरूर लायें। सक्रियता का अर्थ है– यदि आप राजनीति में भाग लेना चाहें तो सक्रिय राजनीति करें या एक जिम्मेदार नागरीक के रूप में देश की संवैधानिक जिम्मेवारियों को अनदेखा न करें और मतदान के दिन अपने मताधिकार का प्रयोग निश्चित रूप से करें। यदि आपका या आपके परिवार का नाम मतदाता सूचि में न हो तो इस कार्य को खुद की देखरेख में पूरा करवायें या खुद जाकर करें। वर्ष २०१०–२०११ में राष्ट्रीय जनगणना शुरु हो चुकी है। मारवाड़ी समाज इस जनगणना में अपनी मातृभाषा के स्थान पर 'राजस्थानी' लिखना न भूलें।◆

जंतर – मंतर :

'हास्योज्ज्वला'

"केवल मनुष्य ही हंस सकता है"

– सीताराम शर्मा

- केवल मनुष्य ही हंस सकता है – 'हास्योज्ज्वला'
- हरियाणा-राजस्थान : भारतीय सेना

"केवल मनुष्य ही हंस सकता है" – 'हास्योज्ज्वला'

विक्टोरिया मेमोरियल उद्यान में प्रात: भ्रमणार्थियों में मेरे साथ एक व्यक्तित्व हैं जो मानसिक–साहित्यिक पौष्टिक खुराक के साथ–साथ आपको हास्य की हिलोरों से भी प्रवाहित करते हैं–साहित्य महोपाध्याय श्री नथमल केड़िया। समाज की तस्वीर बदलने की हम कितनी ही बातें कर लें लेकिन यह कटु सत्य है कि मारवाड़ी समाज में आज भी "केवल धन बोलता है।" हमारे अपने समाज के अपने ही नथमल जी की साहित्य सृजन की प्रतिभा का न तो सही मूल्यांकन किया और न ही वह मान्यता एवं सम्मान प्रदान किया जो गैर–मारवाड़ी समाज ने उन्हें दिया है। सेठ नथमल केड़िया एवं साहित्य महोपाध्याय नथमल केड़िया पर लक्ष्मी एवं सरस्वती की बराबर कृपा का अद्‌भुत एवं सुखद मिश्रण है।

मैं पिछले ६ वर्षों से विक्टोरिया जा रहा हूँ जबकि नथमलजी पिछले ६० वर्षों से। उनके प्रात: कालीन उद्यान भ्रमण की षष्ठीपूर्ति के अवसर पर प्रकाशित *"हास्योज्ज्वला"* के अंक के विषय में साहित्यवाचस्पति एवं पूर्व अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट ने लिखा हैं– *"हास्योज्ज्वला"* न हास्य के इतने रंगों से सराबोर कर दिया है कि ये रंग होली तक क्या, उसके बहुत–बहुत आगे तक उतरने वाले नहीं है और यह कभी मंदे पड़े तो आपने कहा ही है–" हंसिये कि आपके हाथ में *"हास्योज्ज्वला"* है, जो मेरे हाथ से दूर कभी नहीं होगी।"

लोकायात परिक्षक पत्रिका के सम्पादक धर्मशील चतुर्वेदी ने क्या गुनगुनाया है नमूना पेश हैं–"हास्योज्ज्वला फूलों में गुलाब, पक्षियों में हंस, पशुओं में पामेरियन, मछलियों में डालफिन हैं। यह रत्नजड़ित टाई पिन है, आगरे की नमकीन है, उम्र में स्वीट सिक्सटीन है, भैंस को भी सम्मोहित करने वाली बीन है, मनहूसियत को धोने में मुक्कमल रिन है। इतने अच्छे ढंग से सामग्री को संशोधित किया गया है कि इसे देखकर अच्छे–अच्छे सम्पादकाचार्यो को भी झांई आये, बहुत–बहुत बधाई।"

केड़िया ने अपने सम्पादकीय में लिखा है–गौर फरमाइये– "मनुष्य से श्रेष्ठतर कोई प्राणी नहीं है–इस पर शंका उठ सकती है। पर एक बात में सृष्टि का कोई प्राणी मनुष्य के समकक्ष नहीं हो सकता है और वह बात है कि केवल मनुष्य ही हंस सकता है। आप दिमाग पर जोर डालिये–कभी आपने किसी घोड़े–घोड़ी को, गधे–गधी को या साड़–गाय को हंसते देखा है क्या? शेर–चीता–गीदड़–लोमड़ी की तो बात ही छोड़ दीजिये।

हाथी का नाम मैंने इसलिए नहीं लिया कि हमारे गणेश भगवान ने उसका मुंह अपनी गरदन पर फिट कर रखा है और उनकी जब कोई स्तुति करता है तो "प्रसन्न वदनम" अवश्य कहता है।"

अब तक निश्चित रूप से आपके हृदय में गुदगुदी हो रही होगी, हास्योज्ज्वला पढ़ने के लिये लार टपक रही होगी, तो पढ़िये न केवल यह महंगी है। इसका 'मूल्य' है–

औरों को हंसते देखो, मनु हंसों और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ। (कामायनी)

विक्टोरिया कभी प्रात: भ्रमणार्थ आगमन हो तो कृपया ज्ञानपीठ अवश्य पधारे। खोज निकालने में कोई दिक्कत नहीं होगी जहां कहीं आपने घेर–घूमेर धनी छाया वाले तरु के नीचे कुछ बुढ़े सूसट अज्ञान की बातें करते दिखायी दें तो समझ लीजियेगा कि वही ज्ञानपीठ है।♦

हरियाणा-राजस्थान : भारतीय सेना

सेना प्रमुख जनरल वी.के.सिंह एवं
उनकी पत्नी के साथ श्री एवं श्रीमती शर्मा

ले. जनरल प्रेम गोयल के साथ श्री शर्मा

भारतीय सेना के पूर्वी कमान के प्रमुख ले. जनरल विजय कुमार सिंह की पदोन्नति कर उन्हें भारतीय सेना का प्रमुख नियुक्त किया गया। दिल्ली रवाना होने के पहले उनके सम्मान में पूर्वी कमान के चीफ ऑफ रक्षक ले. जनरल प्रेम कुमार गोयल ने फोर्ट विलियम में एक रात्रि भोज का आयोजन किया। मेरा दोनों से ही पूर्व परिचय था।

जनरल विजय कुमार सिंह हरियाणा में मेरे गांव कलानौर से कुछ किलोमीटर दूर बापोड़ा गांव के हैं एवं काफी आपसी परिचिति हैं। ले. जनरल प्रेम कुमार गोयल राजस्थान में जयपुर से हैं एवं उनकी पत्नी प्रमिलाजी भी राजस्थान से हैं।

फोर्ट विलियम में रात्रि भोज में परोसा गया खाना भी राजस्थानी एवं हरियाणा का था जिसमें कढ़ी, सांभर आदि बहुत स्वादिष्ट थे।

जनरल सिंह अब सेना भवन दिल्ली में भारतीय सेना के प्रमुख के रूप में हैं और ले. जनरल गोयल का तबादला जयपुर में चीफ ऑफ स्टाफ के रूप में किया गया है।◆

लघु कथा :

न देने वाला मन :

एक भिखारी सुबह-सुबह भीख मांगने निकला। चलते समय उसने अपनी झोली में जौ के मुट्ठी भर दाने डाल लिए। टोटके या अंधविश्वास के कारण भिक्षाटन के लिए निकलते समय भिखारी अपनी झोली खाली नहीं रखते। थैली देख कर दूसरों को लगता है कि इसे पहले से किसी ने दे रखा है। पूर्णिमा का दिन था, भिखारी सोच रहा था कि आज ईश्वर की कृपा होगी तो मेरी यह झोली शाम से पहले ही भर जाएगी।

अचानक सामने से राजपथ पर उसी देश के राजा की सवारी आती दिखाई दी। भिखारी खुश हो गया। उसने सोचा, राजा के दर्शन और उनसे मिलने वाले दान से सारे दरिद्र दूर हो जाएंगे, जीवन संवर जाएगा। जैसे-जैसे राजा की सवारी निकट आती गई, भिखारी की कल्पना और उत्तेजना भी बढ़ती गई। जैसे ही राजा का रथ भिखारी के निकट आया, राजा ने अपना रथ रुकवाया, उतर कर उसके निकट पहुंचे। भिखारी की तो मानो सांसें ही रुकने लगीं। लेकिन राजा ने उसे कुछ देने के बदले उलटे अपनी बहुमूल्य चादर उसके सामने फैला दी और भीख की याचना करने लगे। भिखारी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। अभी वह सोच ही रहा था कि राजा ने पुनः याचना की। भिखारी ने अपनी झोली में हाथ डाला, मगर हमेशा दूसरों से लेने वाला मन देने को राजी नहीं हो रहा था। जैसे-तैसे कर उसने दो दाने जौ के निकाले और उन्हें राजा की चादर पर डाल दिया। उस दिन भिखारी को रोज से अधिक भीख मिली, मगर वे दो दाने देने का मलाल उसे सारे दिन रहा। शाम को जब उसने झोली पलटी तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। जो जौ वह ले गया था, उसके दो दाने सोने के हो गए थे। उसे समझ में आया कि यह दान की ही महिमा के कारण हुआ है। वह पछताया कि काश! उस समय राजा को और अधिक जौ दी होती, लेकिन नहीं दे सका, क्योंकि देने की आदत जो नहीं थी।◆

अखिल भारतीय समिति की बैठक

दिनांक : रविवार, 28 मार्च 2010

चैम्बर भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखंड

बायें से ललित जवानपुरिया, विजय केड़िया, विनय सरावगी, रा.महामंत्री रामअवतार पोद्दार, रा.अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, उपाध्यक्ष बद्रीप्रसाद भिमसरिया, कमल नोपानी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारण समिति **अखिल भारतीय समिति** के सदस्यों की वर्तमान सत्र की दूसरी बैठक **कोल्हान प्रमंडल झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन साकची शाखा** के आतिथ्य में जमशेदपुर के बिष्टुपुर स्थित चैम्बर भवन में रविवार, २८ मार्च २०१० को सुबह ११ बजे सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा की अध्यक्षता में हुई। कार्यक्रम में उपस्थिति इस प्रकार रही :—

१. श्री नन्दलाल रुँगटा, चाईबासा, २. श्री रामअवतार पोद्दार, कोलकाता, ३. श्री सुभाष मुरारका, कोलकाता, ४. श्री रविन्द्र कुमार लड़िया, कोलकाता, ५. श्री सुबीर पोद्दार, कोलकाता, ६. श्री अरुण गुप्ता, कोलकाता, ७. श्री आत्माराम सोंथलिया, कोलकाता, ८. श्री हरिकिशन अग्रवाल, कोलकाता, ९. श्री सचिन शर्मा, कोलकाता, १०. श्री जयगोविन्द इन्दौरिया, कोलकाता, ११. श्री रामगोपाल बागला, कोलकाता, १२. श्री नन्द किशोर अग्रवाल, कोलकाता, १३. श्री विश्वनाथ भुवालका, कोलकाता, १४. श्री रामनिवास शर्मा (चोटिया), कोलकाता, १५. श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, कोलकाता, १६. श्री जगदीश चंद्र एन मुंधड़ा, कोलकाता, १७. श्री बी. एल. बाहेती, कोलकाता, १८. श्री गोविन्द अग्रवाल, कोलकाता, १९. श्री एस. एल. डोकानिया, कोलकाता, २०. श्री रामप्रसाद भालोटिया, कोलकाता, २१. श्री फकीर चंद्र अग्रवाल, घाटशिला, २२. श्री मोहनलाल सिंघानिया, २३. श्री भादर मल खेमका, जमशेदपुर, २४. श्री विजय कुमार केड़िया, सम्बलपुर, २५. श्री गिरधारी लाल मूनका, जमशेदपुर, २६. श्री रामकृष्ण चौधरी, जमशेदपुर, २७. श्री संतोष अग्रवाल, जमशेदपुर, २८. श्री हरि शंकर संघी, जमशेदपुर, २९. श्री राधेश्याम जवानपुरिया, जमशेदपुर, ३०. श्री कैलाशपति तोदी, कोलकाता, ३१. श्री प्रकाश कुमार पंसारी, चाईबासा, ३२. श्री सांवरमल अग्रवाल, ३३. श्री मातादीन अग्रवाल, ३४. श्री रूढ़मल अग्रवाल, जमशेदपुर, ३५. श्री केदारमल पंसारीया, जमशेदपुर, ३६. श्री मुरलीधर केड़िया, जमशेदपुर, ३७. श्री मातुराम अग्रवाल, ३८. श्री सुरजभान जैन, ३९. श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया, पटना, ४०. श्री कमल नोपानी, पटना, ४१. श्री विनय सरावगी, रांची, ४२. श्री बलराम सुल्तानिया, चाईबासा, ४३. श्री राजेश सिकारिया, पटना, ४४. श्री गणेश कुमार खेमका, पटना, ४५. श्री राधेश्याम अग्रवाल, जमशेदपुर, ४६. श्रीमती पुष्पा चोपड़ा, पटना, ४७. श्री राजकुमार मूंधड़ा, चाईबासा, ४८. श्री पवन कुमार चांडक, चाईबासा, ४९. श्री आर. पी. सोदानी, ५०. श्रीमती चंद्र प्रभा, पटना, ५१. श्री नन्दु ताईनवाला, पटना, ५२. श्री भागचंद पोद्दार, रांची, ५३. श्री कमल कुमार केड़िया, रांची, ५४. श्री रवि शर्मा, रांची, ५५. श्री ओमप्रकाश मूंका, रांची, ५६. श्री मुकेश मित्तल, जमशेदपुर, ५७. श्री सांवरमल टिबड़ेवाल, कोलकाता, ५८. श्री विजय रिंगसिया, जमशेदपुर, ५९. श्री प्रदीप कुमार चौधरी, ६०. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, चाईबासा, ६१. श्री ललित कुमार जवानपुरिया, जमशेदपुर, ६२. श्री राजीव अग्रवाल, जमशेदपुर, ६३. श्री सुनील देवुका, जमशेदपुर, ६४. श्री पुरुषोत्तम दास भौतिका, ६५. श्री ओमप्रकाश झांझरिया, जमशेदपुर, ६६. श्री ओमप्रकाश रींगसिया, जमशेदपुर, ६७. श्री हजारीलाल मूनका, जमशेदपुर, ६८. श्री विनोद कुमार देवुका, जमशेदपुर, ६९. श्री सुरेश

पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए।

पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए।

सोंथलिया, जमशेदपुर, ७०. श्री अशोक कुमार खण्डेलवाल, जमशेदपुर, ७१. श्री नन्द किशोर अग्रवाल, जमशेदपुर, ७२. श्री बिमल रिंगसिया, जमशेदपुर, ७३. श्री सीताराम भरतिया, जमशेदपुर, ७४. श्री हरिराम सरायवाला, जमशेदपुर, ७५. श्री विमल कुमार गुप्ता, जमशेदपुर, ७६. श्री दिलीप कुमार गोयल, जमशेदपुर, ७७. श्री मनोज कुमार अग्रवाल, जमशेदपुर, ७८. श्री बाबूलाल विजयवर्गीय, चाईबासा, ७९. श्री धीरज अग्रवाल, चाईबासा, ८०. अनूप कुमार केड़िया, चाईबासा, ८१. श्री प्रमोद नेवटिया, चाईबासा, ८२. श्री पुरुषोत्तम शर्मा, चाईबासा

निम्न सदस्यों ने अनुपस्थित रहने की सूचना दी:–

१. श्री सीताराम बाजोरिया, मुजफ्फरपुर, २. श्री शिवकुमार गोयनका, ३. श्री एस नारायण तुलस्यान, मुजफ्फरपुर, ४. श्री सज्जन भजनका, कोलकाता, ५. श्री मनोज कुमार अग्रवाल, कोलकाता, ६. श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, कोलकाता, ७. श्री हरि प्रसाद बुधिया, कोलकाता, ८. श्री रमेश कुमार बंग, आंध्रप्रदेश, ९. श्री संजय हरलालका, कोलकाता।

बैठक में पदाधिकारियों का पुष्प गुच्छ से स्वागत के बाद गणेश वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने केन्द्रीय पदाधिकारियों, प्रांतीय पदाधिकारियों सहित साधारण सदस्यों का स्वागत किया।

सभापति श्री रुँगटा ने अध्यक्षयीय वक्तव्य में जमशेदपुर में बैठक कराने व उसमें आने के लिए झारखंड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन, बिहार प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कोल्हान प्रमंडल, पश्चिम बंगाल और उत्कल शाखा के पदाधिकारियो व साधारण सदस्यों को धन्यवाद दिया। आपने सम्मेलन के महामंत्री, और कोषाध्यक्ष को मीटिंग में शिरकत करने के लिए धन्यवाद दिया। भगवान बिरसा मुंडा को याद करते हुए आपने कहा यह आदिवासी बहुल इलाका है। आदिवासी और मारवाड़ी की तुलना करते हुए आपने कहा कि दोनों समुदाय जुझारूपन के लिए प्रसिद्ध हैं। जुझारू प्रवृत्ति के कारण ही मारवाड़ी दूर–दराज में भी अपने कर्म–क्षेत्र में आगे हैं। बैठक के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि हमलोगों की दशा और दिशा एक ही है सहयोग और समन्वय के साथ समाज और राष्ट्र का निर्माण। राजस्थानी भाषा का संरक्षण और प्रचलन की चर्चा करते हुए आपने कहा इस भाषा का वजूद तभी बचा रहेगा जब इसका प्रयोग हम अपने घर में आपसी वार्तालाप में करेंगे। राजनीतिक रूप से समाज को और अधिक जागरूक होने की मंशा आपने जाहिर की।

इसके अतिरिक्त कौस्तुभ जयंती का जिक्र करते हुए आपने कहा कि वर्ष व्यापी इस कार्यक्रम में राष्ट्रपति को आमंत्रित करने की योजना है। आपने कहा कि कौस्तुभ जयंती वर्ष पर डाक टिकट जारी करने की भी एक योजना है तथा इस बारे में संबंधित विभाग से बातचीत की जा रही है। कौस्तुभ जयंती वर्ष पर प्रांतों से आपने सदस्यता अभियान शुरू करने का निवेदन किया। कोलकाता स्थित केन्द्रीय कार्यालय के बारे में आपने कहा कि मकान मालिक से विवाद के कारण कार्यालय की मरम्मत का कार्य रुका हुआ है। अमहर्स्ट स्थित सम्मेलन भवन के जीर्णोद्धार की चर्चा भी आपने की। सम्मेलन के १२५ संरक्षक सदस्य होने पर आपने संतोष प्रकट किया तथा कहा यह संख्या अभी और बढ़नी चाहिए। सम्मेलन के खाते में कुल जमा ८६.५ लाख की राशि की चर्चा करते हुए आपने कहा कि खाते में जो राशि है उससे भविष्य में जरूरतों की पूर्ति होगी। आपने कहा कि संस्था स्वेच्छा से चलती है, दान लेना देना हमारा लक्ष्य नहीं। हमारा एक ही लक्ष्य है समाज के हर परिवार से एक व्यक्ति को सम्मेलन से जोड़ना। आपने बताया कि सम्मेलन को आयकर की धारा ८० जी का प्रमाण पत्र मिल गया है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने अपनी कार्यवाही पढ़ी और कार्यवाही में वर्णित विषयों पर अपना स्पष्टीकरण दिया। आपने कहा कि जमशेदपुर में अखिल भारतीय कमिटि की दूसरी मीटिंग है, पहली मीटिंग कोलकाता में १३ सितम्बर २००९ को हुई थी।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने २००९–२०१० का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि सम्मेलन का आर्थिक विकास देखकर हमलोगों को संतोष हो रहा है। आपने कहा कि इस तरह का आर्थिक विकास होते रहने से सम्मेलन आर्थिक रूप से और मजबूत होगा, किंतु इस ओर अभी और ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इस मौके पर श्री विनय सरावगी ने कहा कि

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने यहां बैठक करवाने का दायित्व सौंपा था जो आज पूरा हो रहा है। आपने कहा कौस्तुभ जयंती के मौके पर भी कुछ कार्यक्रम यहां आयोजित किए जाएं तो बेहतर रहेगा। इस मीटिंग की सार्थकता का जिक्र कर आपने कहा कि आज की मीटिंग से समाज को एक सांस्कृतिक सूत्र में बांधने का संदेश प्रसारित होगा।

बैठक में उपस्थित अन्य सदस्यों के विचार इस प्रकार रहे:–

श्री गोविन्द शर्मा, कोलकाता : राजस्थानी भाषा शब्दकोश के प्रगति के बारे में जानना चाहा। अ.भा.मा.स. कार्य के मामले में राज्य शाखाओं पर अंकुश रखे।

श्री रविन्द्र लड़िया, कोलकाता : डायरेक्टरी फॉर्म में ई–मेल का पता व्यवहार में नहीं है कृपया उसे हटाएं। सम्मेलन और हमारे अन्य शाखाओं का 'लोगो' एक हो।

श्री राधेश्याम अग्रवाल, जमशेदपुर : सम्मेलन का बजट कम है अत: उसमें वृद्धि करें। शादी विवाह के अवसर पर फिजूलखर्ची रोकें। समाज राजनीतिक सक्रियता बढ़ाए।

श्री श्यामलाल डोकानिया, कोलकाता : समाज के सदस्य राजनीति में दिलचस्पी लें।

श्री अरुण गुप्ता, कोलकाता : एक उम्र के बाद मारवाड़ी युवा मंच की सदस्यता खत्म हो जाती है। मायुम की सदस्यता खत्म होने के बाद किस तरह वे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य बन पाएंगे इस पर विचार हो। संगठन चलाने में पूरी दक्षता की जरूरत होती है। कौस्तुभ जयंती वर्ष पर जारी होने वाले डाक टिकट के बारे में उन्होंने विचार दिए।

श्री विनय सरावगी, रांची : कौस्तुभ जयंती वर्ष पर झारखंड सम्मेलन अपनी शाखाओं को कार्यशील करेगा। डॉ राममनोहर लोहिया और घनश्याम दास बिड़ला भारत रत्न से सम्मानित किये जाएं। रांची में डॉ लोहिया की प्रतिमा स्थापित करना तय हुआ है।

श्री राम गोपाल बागला, कोलकाता : कौस्तुभ जयंती के मौके पर कोलकाता में राजस्थानी मेला का आयोजन हो तथा राज्य शाखा भी मेले का आयोजन करे। धर्म के नाम पर फिजूलखर्ची रुके।

श्री विजय केड़िया, सम्बलपुर : कौस्तुभ जयंती के अवसर पर सिर्फ मारवाड़ी समाज के छात्र – छात्राओं को ही सम्मानित न करें बल्कि अन्य समाज के छात्रों को भी सम्मानित करें। कौस्तुभ जयंती वर्ष पर २५ प्रतिशत सदस्य सिर्फ उड़ीसा से बनाये जाएंगे जिसमें वहां की शाखाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

श्री कमल नोपानी, पटना : कौस्तुभ जयंती के मौके पर ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाने की कोशिश करूंगा। सामूहिक शादी के आयोजन में दुल्हन नहीं मिलती। बिहार के बनमक्खी नामक स्थान में आग में स्वाहा १२० गरीब परिवारों की पुन: पुनर्वास व्यवस्था बिहार प्रादेशिक शाखा ने की।

श्री बलराम सुल्तानिया, चाईबासा : कौस्तुभ जयंती के मौके पर प्रत्येक राज्य शाखा कार्यक्रम आयोजित करे। सम्मेलन में नेता ज्यादा हैं कार्यकर्ता कम।

श्री पुरुषोत्तम दास भौतिका, जमशेदपुर : तलाक की संख्या लगातार बढ़ रही है अत: उसे रोकने के लिए जिला स्तर पर कमिटि बनायी जाए जो इसपर निगरानी रखेगी।

श्री संतोष अग्रवाल, जमशेदपुर : जिला शाखा सक्रिय करने के साथ ही जिले में बड़े कार्यक्रम आयोजित किये जाएं। सम्मेलन के ७५ वर्ष पूरे होने के अवसर पर महाराणा प्रताप और भामाशाह के जीवन पर सीडी बने।

श्री नन्दकिशोर अग्रवाल, जमशेदपुर : दोहरी सदस्यता का समाधान खोजें। सभापति श्री रुँगटा जी से आगामी और दो वर्षों तक सभापति बने रहने का अनुरोध किया।

श्री रामनिवास शर्मा, कोलकाता : सभापति का कार्यकाल दो वर्ष की जगह तीन वर्ष हो।

श्री सुभाष मुरारका, कोलकाता : सम्मेलन सदस्यता में इजाफा स्वास्थ्य शिविर लगाकर भी किया जा सकता हैं, अत: शिविर लगाएं।

श्री मुरलीधर केड़िया, जमशेदपुर : २५ दिसंबर को अपने जन्म दिन के उलपक्ष्य में ५१०० रुपये सम्मेलन को दूंगा।

श्री भागचंद पोद्दार, रांची : कौस्तुभ जयंती के मौके पर प्रांतीय और जिला सम्मेलन को कार्य करने का दिशा निर्देश केन्द्रीय सम्मेलन दे। कौस्तुभ जयंती के मौके पर प्रस्तावित कार्यक्रम संतोषप्रद है। सभापति और महामंत्री के क्रियाकलाप और व्यवहार प्रशंसनीय हैं।

श्री ललित जीवनपुरिया, जमशेदपुर : प्रसूति केन्द्र में आदिवासी समाज की प्रसूता महिलाओं की नि:शुल्क जांच हो। तलाक की संख्या में लागातार बढ़ोतरी हो रही है, इसे रोकने के लिए जिला और शाखा स्तर पर कमिटि बने।

श्रीमती पुष्पा चोपड़ा, पटना : अ.भा.मा.स., महिला मंच और मायुम तीनों संगठन अपने अधिवेशन अलग करते हैं जिससे अनावश्यक खर्च होता है। तीनों संगठन मिल जुलकर **"कॉमन प्रोग्राम"** के तहत कार्य करें। गौरीशंकर डालमिया पर डाक टिकट जारी होने से खुशी हो रही है, समाज के अन्य महापुरुषों पर भी डाक टिकट जारी हो। समाज राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करे तथा महिलाएं भी राजनीति में रुचि लें।

श्री राजेश सिंघानिया : मायुम एक सशक्त संगठन है, इस संगठन को सम्मिलित प्रयास से और भी मजबूत बनाएं।

श्री राजेश सिकारिया, पटना : संगठन का स्वरूप पुराना होने के बाद भी मजबूत नहीं है कृपया उसे मजबूत बनाएं।

श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया, पटना : समाज सुधार का काम निरंतर जारी रखने से संगठन मजबूत होगा।

श्री भंवरलाल खण्डेलवाल, जमशेदपुर : सामूहिक

विवाह में सभी मारवाड़ी समाज की भागीदारी हो। सामूहिक विवाह की रूपरेखा भी साफ हो। एक शाखा के सदस्य दूसरी शाखा के सदस्यों से सप्ताह में एक दिन मुलाकात कर वैचारिक आदान – प्रदान करें।

श्री वंशीलाल बाहेती, कोलकाता : संपन्नता के बाद भी हमारे घर में विभाजन क्यों है? विभाजन रोकने की कोशिश करें। हमारे समाज की अस्मिता मजबूत नहीं हुई सिर्फ कुछ लोग मजबूत हुए। समाज के औद्योगिक घराने के लोगों के साथ गोष्ठी करें। कौस्तुभ जयंती के मौके पर क्या संदेश देना चाहते हैं यह स्पष्ट हो? समाज की सूचनात्मक स्थिति मजबूत करें ताकि संवाद स्थापित करने में सुविधा हो।

श्री कैलाशपति तोदी, कोलकाता : आरोप – प्रत्यारोप से संगठन को कुछ प्राप्त होने वाला नहीं। समाज में विद्यमान ज्वलन्त विषयों पर सेमिनार करवाता रहूंगा।

श्री अशोक खंडेलवाल, जमशेदपुर : अ.भा.मा.स. की कोशिश से प्रत्येक राज्य की अलग – अलग डायरेक्टरी बने जिसमें पूरे देश में फैले समाज के लोगों का पता हो जिससे एक दूसरे से संपर्क किया सुगमता से जा सके।

श्री गणेश कुमार खेमका, पटना : अनावश्यक टीका – टिप्पणी संगठन के लिए ठीक नहीं। इसे रोक कर हमलोग संगठन का कार्य आगे बढ़ाएं।

श्री केदारमल पंसारिया : समाज के सदस्य राजनीति में भाग लें। जिला का चुनाव समय पर हो।

कुछ सदस्यों ने सम्मेलन की सदस्यता में एकरूपता हो की बात दोहराई। इसके कारण और निदान खोजें? सदस्यता में एकरूपता लायी जाए।

इस अवसर पर श्री जगदीश एन मुंधड़ा, कोलकाता एवं श्री सुबीर पोद्दार, कोलकाता ने भी अपने विचार दिये।

अन्त में सभापति श्री नन्दलाल रुंगटा ने सदस्यों के प्रस्तावों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि बैठक में सदस्यों द्वारा समाज और संगठन के बारे में खुलकर बातचीत करने से गुण और दोष का पता चला। हमलोग समाज और संगठन में व्याप्त दोष को दूर करने की हरसंभव कोशिश करेंगे। अ.भा.मा.स. ७५ वर्ष पुरानी संस्था है जो अपने सदस्यों के प्रयास से आज भी गतिशील है। इस संस्था का १९८५ में पहली बार लिखित संविधान बना। संविधान में दोहरी सदस्यता का उल्लेख है किंतु हमलोग एकल सदस्यता पर विचार कर रहे हैं। आपने कहा कि अधिवक्ता श्री नन्दलाल सिंघानिया संविधान संशोधन पर कार्य कर रहे हैं। पदाधिकारियों और सदस्यों में उत्साह का संचार करते हुए आपने कहा कि हम लोग जहां रहते हैं वहीं पूरी तत्परता से संगठन का काम करें। बिहार और उत्कल प्रांत का जिक्र कर आपने कहा कि कौस्तुभ जयंती पर दोनों प्रांतों ने कार्यक्रम करने का आश्वासन दिया है, उम्मीद करता हूं कि अन्य प्रांत भी कौस्तुभ जयंती पर कार्यक्रम के बारे में आश्वस्त करेंगे। बिहार, बंगाल और उत्कल प्रांत को ठोस कार्यक्रम बनाने का जिक्र कर आपने कहा कि तीनों प्रांत कौस्तुभ जयंती वर्ष पर मजबूत होकर उभरें तथा तीनों एक प्लानिंग के तहत कार्य करे। विवाह समारोह में बढ़ रही फिजूलखर्ची, मद्यपान, नाच – गान, तलाक, परिवार में हो रहे बिखराव जैसी सामाजिक समस्याओं को समाज के साझा प्रयास से रोकने का आग्रह आपने सदस्यों से किया। गौशाला, अस्पताल, धर्मशाला के बारे में आपने कहा कि हमारे पूर्व्ज सामाजिक हित में इन संस्थाओं का निर्माण करवाया करते थे जो आज लुप्त होने के कगार पर है ऐसी संस्थाओं को बचाने की इच्छा आपने प्रकट की। समाज के जो मेधावी छात्र आर्थिक अभाव के कारण पढ़ नहीं पाते वैसे छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान करने की मंशा आपने जाहिर की। मायुम के बारे में आपने कहा कि उक्त संगठन ने समाज सेवा के क्षेत्र में हमेशा उत्कृष्ट कार्य किया है। आपने कहा केन्द्रीय शाखा से लेकर जिला स्तर की शाखा अपनी गरिमा को कायम रखते हुए बेहतर कार्य करें। बिहार प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के बारे में आपने कहा यदि वहां की शाखा पहल करे तो अखिल भारतीय कमिटि की अगली मीटिंग वहीं करने की कोशिश करेंगे। आपने प्रांतीय सम्मेलनों से सामाजिक–सांस्कृतिक विषयों पर गोष्ठियां करवाने का निवेदन किया। अ. भा. मा. स. का जिक्र कर आपने कहा यह एक वैचारिक संस्था भी है जो समाज में व्याप्त बुराइयों पर विमर्श करती कराती है।

साकची शाखा को धन्यवाद देते हुए सभापति श्री रुँगटा ने बैठक समाप्त करने की घोषणा की।◆

अपनी मातृभूमि की ओर भी ध्यान दे प्रवासी समाज

– संजय हरलालका, सं.रा.महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी जहां भी गये, वहां की संस्कृति में रच–बस गये। मारवाड़ी समाज ने व्यापार किया तथा पैसों के साथ–साथ शौहरत भी खूब कमाई। लेकिन शायद वह अपने ही मूल प्रदेश, अपनी ही जन्मस्थली राजस्थान को भूल गया। ऐसा इसलिए लिखना पड़ रहा है कि जहां पूरे देश में ही नहीं, विश्व में मारवाड़ी की पहचान एक धनाढ्य वर्ग के रूप में हुई, वहीं उसके अपने प्रदेश के लोग आज भी दो जून की रोटी, पीने का पानी, पक्के मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। विगत माह भारत सरकार के पत्र सूचना कार्यालय, कोलकाता संभाग द्वारा कोलकाता के कुछ चुनिंदा अखबारों के पत्रकारों को राजस्थान के जोधपुर, जालौर, नागौर, आहोर आदि जिलों के गांवों के दौरे पर ले जाया गया। जहां केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा ग्रामीणों के उत्थान हेतु कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। इस दौरे के दौरान ग्रामीणों की दयनीय स्थिति को देखकर यह लेख लिखने को बाध्य होना पड़ा।

हम शहरी मारवाड़ी विवाह समारोहों में लाखों–करोड़ों रुपये दिखावे के लिए फूंक देते हैं, धार्मिक आयोजनों में लाखों रुपये खर्च कर देते हैं, समाजसेवा भी खूब करते हैं किन्तु इससे इतर जब हम अपने प्रदेश की बात करें तो शायद हमारे समाज के चन्द लोग ही इस ओर ध्यान देते हैं।

कोलकाता से हिन्दी दैनिक सन्मार्ग, दैनिक स्टेट्समैन (अंग्रेजी एवं बांग्ला), बांग्ला दैनिक कालान्तर, उर्दू दैनिक अखबारे मशरिक तथा अक्कास तथा पीटीआई के प्रतिनिधि इस दौरे में हमसब एक साथ थे। मारवाड़ी के तौर पर मैं अकेला व्यक्ति उनके साथ था। २४ मार्च २०१० को इण्डियन एयरलाईन्स के वायुयान द्वारा दिल्ली तथा वहां से हम जोधपुर पहुंचे। इस दौरान सफर में मेरे सभी साथियों की यही धारणा थी कि वे एक ऐसे प्रदेश में जा रहे हैं जहां धनाढ्य लोग रहते हैं। लेकिन उनकी इस धारणा पर उस समय तुषारापात हुआ जब २५ मार्च को हम नागौर से करीब २०० किमी. दूर सुदूर ग्रामीण अंचल में पहुंचे। वहां के लोगों की दयनीय अवस्था देखकर वे यह कहने को बाध्य हो गये कि क्या यही है मारवाड़ी समाज उन्होंने कोलकाता या अन्य शहरों में जिस मारवाड़ी समाज के लोगों को देखा था उसके विपरीत था यहां का नजारा। जहां केन्द्रीय सरकार की राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत उन्होंने ६०–७० रुपयों की दैनिक मजदूरी के लिए गांव की जवान से उम्रदराज महिलाओं को ८ घंटे तक चिलचिलाती धूप में सड़क पर काम करते देखा। सिर्फ इतना ही नहीं, बाहर से आये लोगों से बच्चों एवं जवान लड़कियों द्वारा पैसा मांगने पर मेरे साथी आश्चर्यचकित रह गये। गांव के लोग जब बिजली, पानी तथा दो जून की रोटी के जुगाड़ की अपनी व्यथा सुनाने लगे तो मुझे भी ऐसा लग रहा था कि क्या यही है वह मारवाड़ी समाज, जिसका पूरे देश में डंका बजता है नागौर के श्री बालाजी गांव में हमें एक ऐसा भी नजारा देखने को मिला जहां एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की नसबन्दी कराने की शर्त यह रखी कि उसे इन्दिरा आवास योजना के तहत मकान बनाने के लिए अनुदान मिले तो ही वह अपनी पत्नी की नसबन्दी करायेगा। नागौर के विकास अधिकारी लिच्छूराम चौधरी ने उसे काफी समझाया कि

◆ हम शहरी मारवाड़ी विवाह समारोहों में लाखों–करोड़ों रुपये दिखावे के लिए फूंक देते हैं, धार्मिक आयोजनों में लाखों रुपये खर्च कर देते हैं, समाजसेवा भी खूब करते हैं किन्तु इससे इतर जब हम अपने प्रदेश की बात करें तो शायद हमारे समाज के चन्द लोग ही इस ओर ध्यान देते हैं।

◆ हमने जोधपुर, जालौर, नागौर, आहोर जिले के जिन–जिन गांवों का दौरा किया, वहां के वासिन्दों की दयनीय स्थिति देखकर प्रवासी समाज के समक्ष यह तस्वीर रखने के लिए बाध्य हुआ कि वे अपनी मातृभूमि की ओर भी ध्यान दे। अपनी मातृभूमि और अपनी संस्कृति को अगर हम भूल गये तो हमारी अपनी पहचान भी एक दिन खत्म हो जायेगी। दिखावा व आडम्बर में अगर फिजूलखर्ची करनी ही है तो एक बार जायें राजस्थान के इन ग्रामीण इलाकों में, और अगर फिर भी आपका मन नहीं डोले तो मैं यही कहूँगा कि हमारी आत्मा ही मर चुकी है।

नसबन्दी कराने पर उसका कोई खर्च तो लगेगा ही नहीं, इसके अलावा हजार रुपये ऊपर से मिलेंगे। किन्तु इस पर भी वह टस से मस नहीं हुआ। अब इसे शिक्षा का अभाव कहें या जरूरत की मजबूरी, यह समझ में नहीं आ रहा है।

इसी गांव में सियाराम मेगवाल के ७ बच्चे हैं। एक लड़का होने के बावजूद दूसरे लड़के की चाहत में बच्चों की यह फौज खड़ी हो गई। बरसात के दिनों में पानी का स्टोर करने हेतु सियाराम मेगवाल को नरेगा के अंतर्गत भूमि सुधार टांका निर्माण के तहत एक लाख की लागत से पानी स्टोरेज बनवाकर दिया गया। बरसात होने पर इसमें पानी का स्टोरेज कर लिया जाता है। इस पानी का उपयोग वे वर्षा भर करते हैं। और अगर दो–तीन साल पानी नहीं हुआ तो फिर तो पानी के लिए भी तरसना पड़ता है।

पाली जिले के पंचायत समिति रोहट के अंतर्गत पड़ने वाले सिनगारी गांव में लड़कियों की शिक्षा हेतु प्राथमिक विद्यालय तो है किन्तु आठवीं कक्षा के बाद ५ कि मी के दायरे में कोई हायर सैकेण्डरी स्कूल न होने के कारण कई लड़कियों को आगे की शिक्षा से वंचित रहना पड़ रहा है। दूर–दराज स्कूल होने के कारण लोग लड़कियों को वहां भेजना उचित नहीं समझते। यहां लोगों ने बताया कि बरसात न होने पर हमें सरकार द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से १० लीटर पानी रोजाना दिया जाता है उसी में हमें अपने सारे काम निपटाने होते हैं।

जालौर के आहोर गांव में द्वीपासमाद से मादरभांकरी तक बन रही ग्रेवाल रोड के निर्माण स्थल पर कार्यरत महिलाओं में जवान से लेकर ७० साल तक की महिलाएं शामिल थीं। चिलचिलाती धूप में कार्यरत कई महिलाएं अपने छोटे–छोटे बच्चों को लेकर वहां आई हुई थीं। दुधमुहे बच्चों को उन्होंने सड़क के किनारे पेड़ के नीचे झूला डालकर उसमें सुला रखा था। काम करते–करते, बीच–बीच इस तरह हमने जोधपुर, जालौर, नागौर, आहोर जिले के जिन–जिन गांवों का दौरा किया, वहां के वासिन्दों की दयनीय स्थिति देखकर प्रवासी समाज के समक्ष यह तस्वीर रखने के लिए बाध्य हुआ कि वे अपनी मातृभूमि की ओर भी ध्यान दे। अपनी मातृभूमि और अपनी संस्कृति को अगर हम भूल गये तो हमारी अपनी पहचान भी एक दिन खत्म हो जायेगी। दिखावा व आडम्बर में अगर फिजूलखर्ची करनी ही है तो एक बार जायें राजस्थान के इन ग्रामीण इलाकों में, और अगर फिर भी आपका मन नहीं डोले तो मैं यही कहूँगा कि हमारी आत्मा ही मर चुकी है।◆

लघु कथा :

सज्जन बनाना मेरे वश की बात नहीं

इंग्लैड के कुछ अधिकारी अपना काम निकालने के लिये भारतीय अमीरों को धन के बदले या गुप्तसूचना देनेवालों को उपाधियां बांटते रहते थे। हालांकि उनका मानना था कि उपाधि प्राप्त कर लेने से कोई महान नहीं बन सकता, इसके लिए सदगुण होने चाहिए। लेकिन वह नाम के भूखे लोगों की तुच्छ अहंकार वृत्ति का पोषण कर अपना मतलब निकाला करते थे। एक दिन एक अधिकारी के दरबार में उपाधि प्राप्त करने के उद्देश्य से एक सेठ आया और बोला, ''जहांपनाह, मुझे सज्जनता की उपाधि दे दीजिए।'' उसने उसे गंभीरतापूर्वक ऊपर से नीचे तक देखा और कुछ सोचते हुए बोला, ''मैं आपको लॉर्ड, ड्यूक, सर, रायबहादुर आदि तो बना सकता हूँ लेकिन आपको सज्जन बनाना मेरे वश की बात नहीं।'' ◆

दूसरों पर हंसने वाला

एक कुंजड़े और कुम्हार ने साझे में ऊंट किराए पर लिया। उन दोनों को अपना–अपना सामान मंडी ले जाना था। उन्होंने ऊंट पर एक तरफ मिट्टी के बरतन रखे और दूसरी तरफ साग–सब्जियां रखीं। जब दोनों ऊंट को लेकर मंडी की ओर चले, तो उन्होंने देखा कि ऊंट रास्ते में चलता हुआ वह बार–बार साग–सब्जियों की ओर गर्दन मोड़ कर थोड़ा–थोड़ा खा लेता था। ऊंट जब भी ऐसा करता, कुम्हार जोरों से खिल–खिलाकर हंसता और कुंजड़ा बेचारा मन मसोस कर रह जाता। फिर कुम्हार की हंसी के जवाब में कहता, ''चलो, देखें ऊंट किस करवट बैठता है।'' मंडी पहुंचने पर ऊंट जब बैठने लगा तो उसे सब्जी वाला हिस्सा हल्का लगा, क्योंकि उसका कुछ हिस्सा तो वह रास्ते में ही खा चुका था। मिट्टी के बर्तनों घड़ों वाला हिस्सा भारी होने से ऊंट उसी ओर बैठा और सारे घड़े चूर–चूर हो गए। इस बार कुंजड़ा हंसा और कुम्हार से बोला, देखा! दूसरों पर हंसने वाला कभी–कभी स्वयं भी हंसी का पात्र बन जाता है।◆

रामजन्म का पावन पर्व है रामनवमी

– त्रिलोकीदास खण्डेलवाल, जयपुर

प्रत्येक संस्कृति और धर्म में महापुरुषों, पैगम्बरों या दैवी अवतारों के जन्म दिवस को समारोह पूर्वक मनाये जाने की परम्परा इसलिए पाई जाती है कि उनका जीवन एक साधारण व्यक्ति को विशेा संदेश देता है, जिसे याद रखने और दुहराते रहने पर उसके जीवन में एक विशेा प्रकार की कर्तव्यपरायणता आती है।

जीसस का जन्मदिन क्रिसमस, हजरत मुहम्मद का जन्म मिलादुन्नबी, कृष्ण जन्माष्टमी, बुद्ध पूर्णिमा, महावीर जयन्ती, गुरुनानक का प्रकाशोत्सव आदि सारे पर्व यह याद दिलाते हैं कि इस दुनिया में सुख, शान्ति सौहार्द्र और भाईचारे के लिए इस तरह जीओ जैसे ये महामानव जीये थे। इनके गुण, कर्म और वचन प्राणी मात्र को एक आदर्श जीवन की प्रेरणा देते हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम राम भी एक ऐसे ही विशिष्ट चरित्र हैं जिन्होंने ऐतिहासिक पुरुष के रूप में राजा दशरथ के राजघराने में पैदा होकर चौदह वर्ष का वनवास भोगते हुए अपने पुत्र धर्म और रघुकुल रीत का पालन किया। ये राम भारत के जन मानस के देवता हैं। आजीवन राम का नाम लेने वाले हिन्दू मृत्यु पर्यन्त राम के नाम को ही सत्य मानते हैं। आस्थाओं, त्याग और संयमित मर्यादाओं के जीवन्त पुरुष राम एक संस्कृति पुरुष हैं जिन्हें भारतीय पन्य निरपेक्षता का एक सजीव अवतार कहा जा सकता है।

लखनऊ से सटे फैजाबाद जनपद में सरजू नदी के तट पर जो भव्य प्रासाद खड़े हैं वहां कभी अयोध्या नरेश दशरथ के बाल गोपाल खेला करते थे। सरजू नदी के तट पर वे सपाट मैदान अभी भी इस बात के साक्षी हैं कि यहां दशरथ पुत्र और उनके बाल सखा आंख मिचौली खेलते हुए आपस में भाग दौड़ किया करते थे, भक्त कवि तुलसी (जो सूरदास की भांति वात्सल्य रस के कवि नहीं हैं) राम के शैशव की साक्षी इस अयोध्या से अभिभूत हुए। सरजू नदी के तटों और चौहट हाटो को देखते ही भक्त मन को ऐसा लगता है बच्चे तीरंदाजी की प्रतिस्पर्धा में भाग दौड़ कर रहे हैं पृष्ठभूमि में खड़े भव्य राजभवन इस बात के प्रमाण हैं कि राजा दशरथ कितने प्रतापी राजा रहे होंगे। हनुमानगढ़ी पर चढ़ने से जो अनुभव होता है वह यह संकेत देता है कि उस सेवक का जीवन भी कितना धन्य था जिसने राम और जानकी की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

कनक मंदिर भवन का मुख्य द्वार है। यह वह अप्रतिम राजभवन है जो माता कैकेयी ने सीता के विवाहोपरांत मुंह दिखाई में भेंट स्वरूप दिया था। इस भवन का स्थापत्य अनुपम ही नहीं विश्व स्तरीय है।

सैकड़ो वर्षो के झंझावातों के बावजूद इसकी चमक यथावत है। एक एक कोने से वास्तुकारों की साधना परिलक्षित होती है। मध्य में स्थित राम सीता की प्रतिमायें इतनी जीवंत हैं कि सैकड़ों श्रद्धालु घंटों खड़े उन्हें अपलक निहारते हुए अपने आराध्य से मौनालाप करते रहते हैं। मान्यता यह है कि इस कनक भवन में किये गये दर्शन और प्रार्थना के क्षण केवल आत्मिक आंनद ही नहीं देते वरन विशेष पुण्य लाभ भी देते हैं। कनक भवन में विशेष पूजा और आरती के लिये श्रद्धालुओं की पंक्तियां घंटों करबद्ध खड़ी दिखलाई देती है। स्वर्ण जटित यह कनक भवन आज भी बहुमूल्य है। इसके आंगन और परिक्रमा पथ हजारों श्रद्धालुओं को पूजा उपासना की सुविधा प्रदान करते हैं। इस राष्ट्रीय स्मारक का जीर्णोद्धार हमारे समय की आवश्यकता है। इस राम नगरी को पूरे विश्व में फैले अनिवासी भारतियों की आस्था का केन्द्र मानकर पर्यटन के लिये विकसित किया जाना चाहिए।

अयोध्या के मंदिर, राजप्रासाद, गलियां, चौक–चौबारे सब आज भी अयोध्या लगते हैं। राम लला की मूर्ति और मंदिर तो केवल प्रतीक है, किन्तु राम की जो लीलायें इस भूमि से जुड़ी हैं वे करोड़ों भारतवासियों को एक अध्यात्मिक सुख और शांति प्रदान करती है। राम की रामायण का अयख्यान वाल्मिकी ने साहित्यिक ढंग से प्रस्तुत किया है, किन्तु महाकवि तुलसी ने इस कथा को मुगल युग में एक मर्यादा पुरुषोत्तम महानायक के आदर्शो के रूप में काव्यबद्ध किया। राम केवल राजा नहीं हैं, सीता जगत जन्नी हैं। रामायण का प्रत्येक संबंध ऐसा है जैसा इंसानों में होना चाहिये। भाई, माँ, पत्नी, मित्र, सेवक, सखा, राजा शत्रु सभी को अपनी अपनी मर्यादाओं में बांधने वाले तुलसी अपने नायक राम को इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि उसे धर्मो में बांधना एक संकीर्णता होगी। राम सबके हैं, उन्होंने अधर्म से लड़ने के लिये अवतार लिया है। रावण से उनका युद्ध सत्य और असत्य की लड़ाई है। रामकथा के सभी आख्यान और प्रकरण यह संकेत देते हैं।

तुलसी के राम भाग्यवादी या नियतिवादी नहीं हैं। पुरुषार्थ उनका कर्म है और यह कर्म एक ओर ताड़का का वध करना है तो दूसरी और शबरी के जूठे बेर खाकर मानव मात्र की समानता को प्रतिष्ठित करना भी है। वे युवराज होकर अपने कर्तव्य पालन में जंगल में खुश हैं। लक्ष्मण को शक्ति लगने पर वे एक साधारण बड़े भाई की तरह विलाप करते हैं। राम कथा यद्यपि एक राजघराने की कहानी है किन्तु उसके सभी पात्र ऐसे लगते हैं जैसे वह घर घर की कहानी हो। आज के समाज जो पैसे और शक्ति को मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य समझते हैं उन्हें यह सुनकर हैरत होती है कि भरत ने राजगद्दी पर बैठने के बदले अपनी माँ कैकेयी को लांछना देते हुए कहा हैं कि मुझे यह राज्य ही नहीं चाहिये। बड़े भैया की खड़ाऊएं राज्य सिंहासन पर रहेंगी। काश हमारे मंत्री, सांसद और विधायक रामायण के इन पात्रों से कुछ शिक्षा ले सकें, रामायण की नारी पात्र सहज होते हुए भी आदर्श हैं। आज का अंधा और संकीर्ण मनुष्य जब धर्म के नाम पर कायरतावादी आतंकी धमाके कर रहा है, राम के हनुमान बड़ी वीरता और साहस के साथ राक्षसों का अकेले सामना करते हैं। निशाचर माया की गुप्तचरी कर राम रावण युद्ध में सत्य को विजयी बनाते हैं। धर्म युद्ध का यह रूप भारतीय संस्कृति की नैतिक विरासत है जिसे हम आज भी संजोये हुए हैं। रामनवमी एक ऐसे युग पुरुष का जन्मदिन है जो मानवता के पुनीत आदर्शों को जीवंत प्रतीक है। राम को अवतार मानने वाले अपने को हिन्दू कह सकते हैं पर राम चरित्र की विशेषतायें सभी पैगंबरों और संत महापुरुष के कार्यों और विचारों में मिलती है। राम का सम्पूर्ण जीवन त्याग, तपस्या, कर्तव्य और मर्यादित आचरण का चरम निर्देशन है। उससे सभी धर्मावलंबी प्रेरणा ले सकते हैं और उन्हें लेनी भी चाहिये। मर्यादा निर्माण का यह अभ्यास विश्व इतिहास में अनूठा है। यही कारण है कि विज्ञान और विकास की इस अंधी दौड़ में राम घर घर के और जनमानस के देवता हैं। तुलसी की रामचरित मानस भारतियों को कंठस्थ है। रामानंद सागर ने जब रामायण को टी. वी. पर प्रस्तुत किया तो देखने वाले इतने मंत्रमुग्ध हुए कि मानो शहरों में रामायण कर्फ्यू लग रहा हो।

राम के चारों ओर राजनीति नहीं की जा सकती। वे शक्ति के नहीं विरक्ति के प्रतीक हैं। वे लंका जीत कर विभीषण को सौंप देते हैं। राम के सभी मंदिर ***सीता समारोपित बाम भागम्*** होने के कारण नारी स्वतंत्रय और महिला समानता के प्रतीक हैं। राम राज्य राजधर्म का एक आदर्श है। ऐसे यशस्वी और तपस्वी राम का आज रामनवमी के दिन स्मरण और वन्दन प्रत्येक भीरतीय का पुनीत कर्तव्य है।◆

थोड़ा हंसले :

एक छोरो बाबाजी नै पूछ्यो – बाबाजी! मैं थारी घोड़ी की पूंछ पकडल्यूं तो थे मन्नै के देयो?
बाबाजी झट पडूत्तर दिया – घोड़ी मतई देदेसी।

◆◆◆◆

एक भायलो आपकै करूप भायलै नै पूछ्यो – भगवान रूप बाटरयौ हो जणा तु कठै गयो हो?
करूप भयलो चटस्यूं पडूत्तर दियो – बुद्धी लेण चल्यो गयो हो। जद तू कठै हो?

◆◆◆◆

एक भायलो ठाकरां नै पूछ्यौ–आपकै कितणा टाबर?
ठाकर गरभावता सा बोल्यो–गिरवरसिंह, फ्हाड़सिंह, डूंगरसिंह, पर्वतसिंह, और एक बाई लोढ़ी कुल पांच हैं।
भायलो हांस्तो सो बोल्यो–सगळा बाठा ही बाठा भेळा कर लिया।

◆◆◆◆

एक दंपत्ति अपनी शादी की चालीसवीं वर्षगांठ मना रहे थे। संयोग से उस दिन पत्नी का साठवां जन्मदिन भी था। उस रात उनके घर में एक परी प्रकट हुई। उसने उन दोनों से कहा कि वे दोनों इतने लम्बे समय से बड़े प्यार से रह रहे हैं जिससे वह बहुत खुश है। परी ने कहा कि वे उससे एक एक वरदान मांग सकते हैं।

पत्नी, जो कि अपने पति से बेइंतहा प्यार करती थी, ने परी से कहा कि वह अपने पति के साथ दुनिया की सारी मनोरम जगहों की सैर करना चाहती है, पर उसके पास इतने पैसे नहीं हैं। परी ने अपनी छड़ी घुमाई और पत्नी के हाथ में हवाई जहाज के टिकटों से भरा लिफाफा आ गया।

अब मांगने की बारी पति की थी। उसने एक मिनट सोचा फिर बोला – "ईमानदारी से कहूं, तो मैं अपने लिये अपने से 30 साल छोटी पत्नी चाहता हूं। परी ने अपनी छड़ी घुमाई और पति महोदय तुरंत 90 साल के हो गये।

◆◆◆◆

समाज संगठन के बारे में वर्तमान व भावी चुनौतियां व उनका हल

:: श्री रामनिवास लखोटिया ::

यह एक नितान्त सत्य वस्तुस्थिति है कि हमारे देश के विभिन्न नगरों में कई सामाजिक संगठन हैं एवं अनेक सामाजिक संस्थाएं समाज की कई समस्याओं जैसे, उच्च शिक्षा, रोजगार, सामाजिक कुरीति निवारण आदि कार्यक्रमों में कार्यरत भी हैं। लेकिन फिर भी यह बहुधा देखने में आता है कि समाज के अधिकांश प्रगतिशील, उच्च पदासीन व्यक्ति एवं नए उद्योगपति तथा व्यवसायी महानुभाव समाज एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के सदस्यों की समस्याओं के प्रति उदासीन रहते हैं। वास्तव में यह स्थिति सामाजिक कार्यकत्ताओं के लिए चुनौतीपूर्ण है। इस चुनौती का सामना करने के लिए कुछ कारगर उपायों एवं सुझावों की ओर समाज के संवेदनशील कार्यकत्ताओं एवं अन्य व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से इस लेख में मैनें कुछ विचार प्रस्तुत किये हैं।

उन्नतिशील व्यक्तियों को समाज से जोड़ना:

पिछले कुछ वर्षों में हमें यह देखने को मिला है कि समाज के नवयुवकों ने शिक्षा, व्यवसाय एवं उन्नतिशील उद्योगों एवं व्यवसायों में बड़ी सराहनीय प्रगति की है। वे हम सभी के प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं। लेकिन समाज ऐसे व्यक्तियों से यह भी अपेक्षा रखता है कि हमारे समाज में जो आर्थिक, शैक्षणिक, औद्योगिक या अन्य दृष्टि से कमजोर व्यक्ति हैं उनकी हम यथा शक्ति भरपूर मदद करें। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से हमारा निवेदन है कि वे समाज के अपेक्षाकृत अधिक धनी और विभिन्न उन्नतिशील कार्यकलापों में संलग्न लोगों से सम्पर्क कर उन्हें सामाजिक कार्यक्रमों में समुचित आदर सहित आमंत्रित करें तथा उन्हें समाज के किसी भी क्षेत्र में पिछड़े वर्ग की मदद करने के लिए प्रेरित क़रें। इसके लिए समाज के विशेा उत्सवों एवं आयोजनों में उन्हें प्रेम व आदर सहित आमंत्रित करें ताकि वे अपने विचारों और अनुभवों से समाज का सही–सही मार्गदर्शन कर सकें।

समाजहित के कार्यों की जानकारी दें :

हमारे कई सामाजिक संगठनों द्वारा समय–समय पर कई समाजोपयोगी व सेवा के कार्यक्रम किये जा रहे हैं। इनकी पूरी जानकारी समाज के सभी वर्गों को कई बार नहीं मिल पाती। इसलिए समाजिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे ऐसे कार्यक्रमों की जानकारी अपने मित्रों को भी दें ताकि अधिक से अधिक व्यक्ति उनका लाभ उठा सके। इसके लिए प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता यदि एक छोटा सा यह नियम बना ले कि वह कम से कम एक ओर व्यक्ति को इनकी जानकारी देगा और उसे समाज से जोड़ने का पूरा प्रयास करेगा। ऐसा होने से धीरे–धीरे बहुत से नये लोग सामाजिक कार्यक्रमों का अवलोकन कर पायेंगे एवं समाज से सक्रिय रूप से जुड़ सकेंगे।

आशा है कि हमारे समाज के सभी कर्मठ कार्यकर्ता उपरोक्त निवेदन को क्रियान्वित कर समाज संगठन को और मजबूत तथा उपयोगी बनाने में अपनी भागीदारी खूब निभायेंगे।◆

सम्मेलन के नये संरक्षक सदस्य

संरक्षक सदस्य संख्या–१२२
नाम: महावीर पेट्रो प्रोडक्टस प्राइवेट लिमिटेड
प्रतिनिधि: श्री राम दयाल मसकरा
पद: अध्यक्ष
कार्यालय का पता:
बरौनी इन्स्ट्रीयल एरिया
पो०–तिलरथ–८५११२२
जिला–बेगुसराय
(बिहार)
दूरभाष: (०६२४३) २४४३७०
फैक्स: ०६२४३–२४४३७१
मोबाईल: ९४३१२११४६६
ई–मेल : dkmaskara@ gmail.com
निवास का पता:
मारवाड़ी मोहल्ला,
पो०+जिला–बेगुसराय (बिहार)–८५११०१

संरक्षक सदस्य संख्या–१२३
नाम: कुंजलाल श्याम सुन्दर धानुका चैरिटेवल ट्रस्ट
प्रतिनिधि: श्याम सुन्दर धानुका
पद:ट्रस्टी
कार्यालय का पता:
२९, बालिगंज पार्क
कोलकाता–७०००१९
दूरभाष : (०३३) २२८०१७४२
फैक्स : (०३३) २२४९७३१७
मोबाईल : ९८३०२३७००१
ई–मेल : ssdhanuka@sumangal.net
निवास का पता:
२९, बालिगंज पार्क
कोलकाता–७०००१९

संरक्षक सदस्य संख्या–१२४
नाम: मे० मुकेश मित्तल
प्रतिनिधि: मुकेश मित्तल
कार्यालय का पता:
मित्तल निवास,
गोविन्दनगर
१२ न० के.डी.फ्लेट के सामने
कदमा, जमशेदपुर–८३१००५
दूरभाष: ०६५७–२३००२१३
फैक्स: ०६५७–२३००२१३
मोबाईल: ९९३१११११७८०
ई–मेल : mukesh_75@sify.com
निवास का पता:
मित्तल निवास,
गोविन्दनगर
१२ न० के.डी.फ्लेट के सामने
कदमा, जमशेदपुर–८३१००५

संरक्षक सदस्य संख्या–१२५
नाम: एन.एस.आई (इंडिया) लिमिटेड
प्रतिनिधि: नारायण प्रसाद माधोगढ़िया
पद: चेयरमैन
कार्यालय का पता:
बेलतला
चामरेल
हावड़ा–७११११४
दूरभाष: ०३३–२६६६–२५८५
फैक्स: ०३३–२६६६–२५८२
मोबाईल : ९८३००९६७००
ई–मेल : nsilimited.com
निवास का पता:
८बी/१ क्वीन्स पार्क
कोलकाता–७०००१९

संरक्षक सदस्य संख्या–१२६
नाम: मैसर्स पशुपती एलौयज
प्रतिनिधि: सुदीप अग्रवाल
कार्यालय का पता:
६२२/६ शास्त्री नगर, मेरठ
उत्तर प्रदेश–२५०००४
दूरभाष: ०१२१–२७६८४२३/४०१०९०३
फैक्स: ०१२१–२६२१२४३
मोबाईल: ९३१९८०४१७०
ई–मेल : sudeepsai@gmail.com
निवास का पता:
६२२/६ शास्त्री नगर, मेरठ
उत्तर प्रदेश–२५०००४

संरक्षक सदस्य संख्या–१२७
नाम : आई.एफ.जी.एल रिफ्रेक्टोरीज लिमिटेड
प्रतिनिधि : श्री शिशिर कुमार बाजोरिया
कार्यालय का पता :
३, नेताजी सुभाष रोड
कोलकाता – ७०० ००१
दूरभाष : ०३३–२२४८ २४११
फैक्स : ०३३–२२४८०४८२
ई–मेल : shishir@bajoria.in
निवास का पता :
१४/१ए, बर्द्धवान रोड़
कोलकाता – ७०० ०२७
दूरभाष : ०३३–२४७९ २६७३

बहुमुखी प्रतिभा के धनी कविवर
ताऊ शेखावाटी

परिचय : राजस्थानी–हिन्दी भाषा के जाने माने हस्ताक्षर श्री ताऊ शेखावाटी का नाम आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। कविता के क्षेत्र में अपनी प्रभावशाली मंचीय क्षमता सहित वे राजस्थानी के वे प्रथम साहित्यकार हैं, जिनकी रचनाएं राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा १०, ११ एवं १२ की अनिवार्य हिन्दी में देश के मूर्धन्य संत कवियों सूर, तुलसी, मीरा, निराला, पंत आदि के साथ सम्मलित हैं। तथा जिन्हें २० लाख विद्यार्थी प्रति वर्ष पढ़ते हैं। – संपादक

हास्य कवि के रूप में देश–विदेश में चर्चित श्री ताऊ शेखावाटी राजस्थानी भाषा के वे प्रथम साहित्याकार हैं, जिनकी रचनाएं राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा दसवीं,ग्यारहवीं एवं बारहवीं, के पाठ्य क्रम में स्वनामधन्य साहित्यिक सूर्य सूर तुलसी, मीरा, निराला, पंत दिनकर आदि के साथ सम्मलित हैं और जिन्हे पढ़कर प्रति वर्ष बीस लाख विद्यार्थी लाभवान्वित हो रहे हैं।

इनका जन्म दिनांक १७ सितंबर १९४२ को रामगढ शेखावाटी जिला सीकर राजस्थान में हुआ था। इनके पिताश्री का नाम श्री मन्नालाल जांगिड है। इन्जिनीयरिंग की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात ये वर्षों ही हेश के कई बड़े सीमेंट उद्योगों में कार्यरत रहने के पश्चात ४२ वां की अवस्था में आते–आते अपना वह व्यवसाय त्याग कर संपूर्ण रूप से साहित्य सृजन में जुट गए। साहित्य जगत में इनकी विशेष रूप से चर्चित कृतियां हैं :–

1. हम्मीर महाकाव्य :

मात द्वारिका सदा ऐक ही, सीख भरी है मेरै कान।
जीं धरती पर खावो–पीवो, अन–जल दयो बींनैं सम्मान।।

अपनी माताश्री श्रीमती द्वारिका देवी की इस सीख को सिरोधार्य कर अपनी कर्मस्थली सवाई माधोपुर के विहंगम गढ़ के स्वामी रहे इतिहास प्रसिद्ध महाहठी राव राजा हम्मीरदेव चौहान के जीवन चरित्र पर लिखी १४३१ छंदों वाली यह कृति राजस्थानी के महाकाव्य लेकन विधा की श्रेठ कृति है जो राजस्थान शिक्षा बोर्ड की कक्षा दसवीं की अनिवार्य हिन्दी मे शामिल है।

2. मीरा–राणाजी संवाद : राजस्थानी भाषा की सर्वश्रेष्ठ कृति को प्रतिवर्ष प्रदान किए जाने वाला बहुचर्चित लखटकिया लखोटिया पुरस्कार प्राप्त यह कृति भक्तमयी मीरा पर संवाद–काव्य विधा में लिखी गई प्रथम कृति का मान प्राप्त कृति है, जो राजस्थान शिक्षा बोर्ड की कक्षा ११ वीं की अनिवार्य हिन्दी की पुस्तक में पढ़ाई जाती है।

3. हेली सतक सवाई : राजस्थानी में आत्मा अथवा परमात्मा को 'हेली' शब्द से संबोधित करते हुए हेली गीत लिखने एवं भजनों के रूप में गाए जाने की पुरानी प्रथा है। ताऊ शेखावाटी की यह कृति 'हेली सतक सवाई' भारतीय वार्गमय की संबोधन काव्य विधा में एक ही संबोधन को संबोधित १३५ गीतों वाली प्रथम कृति है।

अन्य कृतियां:–

१. सोरठां री सौरम (राजस्थान शिक्षा बोर्ड की कक्षा १२ वीं में स्थान प्राप्त कृति)
२. सालाहेली (हास्य–व्यंग्य काव्य)
३. सुणले ताई बावली (हास्य–व्यंग्य काव्य)
४. कह ताऊ कविराज (हास्य–व्यंग्य काव्य)
५. हाय तुम्हारी यही कहानी (हिन्दी उपन्यास)
६. एक और देवयानी (हिन्दी कथा संग्रह)
७. सेर को मिल गया सवा सेर (बाल कथा संग्रह)

पुरस्कार एवं सम्मान:–

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं सस्कृति अकादमी, बीकानेर के गणेशीलाल व्यास पद्य पुरस्कार से अलंकृत कविवर ताऊ शेखावाटी अन्य भी कितने ही स्थानों पर राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों से नवाजे गए है। मारवाड़ी सम्मेलन एवं समाज विकास पत्र परिवार की ओर से उन्हें ढेर सारी बधाई एवं मंगलकामनाओं सहित। ◆

म्हे बिणजारा गीतड़लाँ रा

बैंता ढाणा ठौर ठिकाणा, कुण जाणै किण पाळ कठै।
म्हे बिणजारा गीतड़लाँ रा, आज अठै अर काल बठै।।
हँसता–गाता टेर लगाता, गीत सुणाता लोगाँ नैं।
म्हे सबदाँ रो बिणज करणियाँ, बेचाँ साँचो माल अठै।।
सुन्दर सुपनाँ में बिचरणियाँ, जीवाँ सदाँ कळपनाँ में।
चिंतन में अंबर स्यूँ ऊँचा, चढ़ ज्यावाँ ततकाल अठै।।
म्हे मनवाराँ रा लोभीड़ा, मनड़ै नैं मनवार मिल्याँ।
अणगायोड़ा भी गाज्यावाँ, मिल ज्यावै सुरताल जठै।।
म्हे मनमौजी रमता जोगी, घर–घर अलख जगावणियाँ।
मेळाँ रै रेळाँ में डोलाँ, गाता फाग धमाल अठै।।
म्हे तो पंछी रैण बटेऊ, भोर पड्याँ उड ज्याँवाला।
जाणै कल री रात कठै, अंर किण तरवर री डाळ कटै।।
भाट भगत रा, दास कलम रा, वंसज सूर कबीरै रा।
हाल फकीरी में होर्‌या हाँ, म्हे तो मालामाल अठै।।

ज्योति प्रसाद अगरवाला की तीन कविता

[असमिया भाषा से हिन्दी अनुवाद 'ज्योति सुधा' से साभार]

असम के रवीन्द्रनाथ माने जाने वाले स्व. ज्योति प्रसाद अगरवाला का जन्म १७ जून १९०३ को डिब्रुगढ़ अंचल के तामुलबारी चाय बगीचे में हुआ था। आपने अपनी कविता से असम के युवकों से स्वतंत्रता आन्दोलन की अलख जगा दी। आज भी जन–जन में आपकी कविता गुँजती है। प्रस्तुत है आपकी तीन कविता मूल असमिया भाषा से हिन्दी में अनुवाद – संपादक।

1. प्रणति प्रणति प्रणति

प्रणति प्रणति प्रणति, नव जन जीवन की,
अभिनव ज्योति, प्रणति प्रणति प्रणति।
आज हर स्वर में जागे , जनता की आशा,
कण्ठ कण्ठ में जागे जुझारु दलित की, दुर्दमनीय भाषा।
झंकृत नव जीवन का झंद, खिल उठो, खिल उठो,
साम्य संस्कृति के, विश्व उज्ज्वल अरविंद।
नव ज्योति जली दीवाली–सी, उर–उर प्राण–प्राण में
पूर्ण चंद्रिका– सी
विकसित प्रकाशित हो उठे जन प्रगति।
शिल्पी प्रतिभा से चित्रित करो नवरंग से
नव पृथ्वी की छवि, कवि गीत–गीत में नव भविष्य की,
अध–बुझी गूढ़ कथा कहो।
तरुण तरुण जितने ज्योतिपुजारी,
जीत अंधकार को, जनता के संग्राम को,
रणदल के हरावल बन, ले चलो जनता को,
प्रकाश की ओर, प्रकाश की ओर, प्रकाश की ओर।।

2. सोने सा सुनहरा कल

चलो जनता, रोंद कर चलो आगे बढ़ चलो।
भविष्य की गोद में, चमक रहा है,
महान जनता का, महानवजीवन का,
महामंगल का, महासौंदर्य का,
प्रकाश बांटता, सोने सा सुनहरा कल।
अरुण पथ की अरुण पृथ्वी,
चल, बस आगे चल।

3. नवमानविय

करनी होगी पृथ्वी प्रकाशमय
ज्ञान विज्ञान का
सभी धर्मों का
नाना आदर्शों का
नाना विभेदों का
करना होगा महान समन्वय।

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

SCARF worth Rs. 360/- OR Books with every 1 year subscription

TIE (720/-)+ Scarf (360/-) worth Rs. 1080/- OR Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

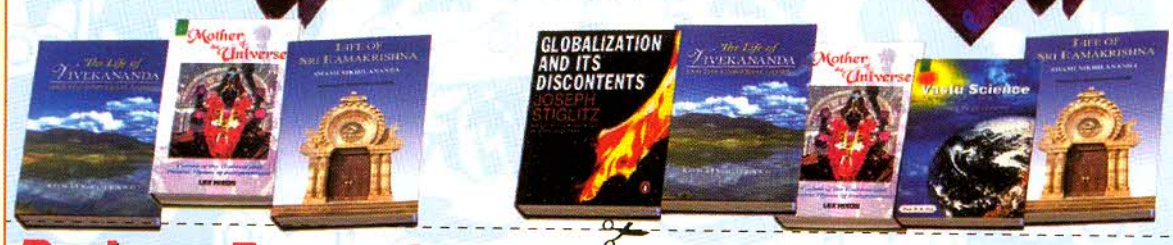

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe Business Economics

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)

Name : Mr./Ms _____

Address : _____

_____ City/District: _____

State: _____ Country: _____ Pin Code : _____

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : **Kolkata** : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 044-4217 1320, 98416 54257 • **New Delhi** : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : ओमप्रकाश हरलालका
कार्यालय का पता :
१२, बि.बि.डी. बाग
प्रथम तल्ला
कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–०९८३११२४५१४

नाम : प्रेमा पनसारी
कार्यालय का पता :
कोल्ड स्टोरेज कम्पेलक्स
बराइपल्ली
सम्बलपुर
मोबाईल नं.–०९४३७१५८४८८

नाम : नभनीत बजाज
कार्यालय का पता :
सुदर्शन पेपर एण्ड बोर्ड प्राइवेट लिमिटेड
सुट नं० ३११,तृतीय मंजिल,नारायणी बिल्डिंग
२७ ब्रबर्न रोड, कोलकाता–७००००१
मोबाईल नं.–०९८३१०३०१६८

नाम : राज कुमार सुल्तानिया
कार्यालय का पता :
राजु सुल्तानिया
३१८ चित्तरंजन एवेन्यू,
विपरीत लिबर्टी सिनेमा, कोलकाता–६
मोबाईल नं.–०९८३००८१४५१

नाम : दिलीप कुमार मुरारका
कार्यालय का पता :
मुरारका ट्रेडिंग कम्पनी
चौक बाजार, जुगसलाई
जमशेदपुर–८३१००६
मो.–०९४३१३०१०७०

नाम : श्री दीपक भादोरिया (अग्रवाल)
कार्यालय का पता :
गगन ट्रान्सपोर्ट कंम्पनी प्रा० लि०
नया बाजार, जुगसलाई
जमशेदपुर–८३१००६
मो.नं.–०९४३१३००१२६/९२७९३५३१००

नाम : सुशील कुमार चौबे
कार्यालय का पता :
लक्ष्मी ऑटो सेन्टर, सदर बाजार
टेलीफोन एक्सचेन्ज रोड, आमला टोला
चाईबासा–८३३२०१
मो. नं.–०९४३१९६०९९९/९४७२७११५४५

नाम : अरुण कुमार तोदी
कार्यालय का पता :
६१, पी० एन० मालीया रोड
पोस्ट– रानीगंज–७१३३४७
जिला– वर्द्धवान (पश्चिम बंगाल)
मो.–०९४३४००२०२१

नाम : विजय अग्रवाल
कार्यालय का पता :
अर्चना स्टोर्स
चाईबासा–८३३२०१
सिंहभूम (प०), झारखंड
मो. नं.–०९२३४२०६५६५

नाम : श्याम सुन्दर भोगला
कार्यालय का पता :
३, प्रिंसेप स्ट्रीट
कोलकाता–७०००७२
मो.–०९८३१०५२२१४

सूचना

सदस्यों की डायरेक्टरी का प्रकाशन कार्य प्रगति पर है। जिन सदस्यों ने अभी तक फार्म जमा नहीं दिया हो, से एकबार पुनः अनुरोध है कि वे अपना फार्म जल्द से जल्द जमा कराने की कृपा करें।

– रविन्द्र कुमार लड़िया, संयोजक

सम्मेलन के नये विशिष्ट सदस्यों का स्वागत

नाम : श्री भंवर लाल खण्डेलवाल
कार्यालय का पता :
भंवरलाल रमेश कुमार
मील ऐरिया, साकची
जमशेदपुर–८३१००१
मोबाईल नं – ०९२३४६२४०११

नाम : श्रीमती चन्द्रा प्रभा टेनवाला
कार्यालय का पता :
राँची सेनीटेशन्स
एक्जीविशन रोड, नजदीक आन्ध्र बैंक
पटना–८००००१
मोबाईल नं – ०९२३४३७१०८१

नाम : डॉ. संध्या चौबे
कार्यालय का पता :
१७५२, द्वितीय मंजील
सोहनगंज, सब्जी मंडी
दिल्ली–७
मोबाईल नं – ०९३११५९५९८६

नाम : श्री सुशील कुमार अग्रवाल
कार्यालय का पता :
श्री श्याम प्लास्टिक्स
जे. आर. डी टाटा इन्डस्ट्रीयल इस्टट
कनरु विजयवाड़ा – ७
मोबाईल नं – ०९८४८११३८४२

नाम : श्री छत्तर सिंह गिड़िया
कार्यालय का पता :
बी. एम ट्रेडिंग एजेन्सी, डी. के. रोड
उत्तर लखीमपुर,
लखीमपुर – ७८७००१, असम
मोबाईल नं – ०९४३५०८५०४६

नाम : श्री परमेश्वर लाल नागोड़ी
कार्यालय का पता :
जय भारत प्रेस, संतोष भवन
३४८, ए. टी. रोड
गुवाहाटी – ७८१००९
मोबाईल नं – ०९८६४०४५१६६

नाम : श्री संजय छावछरिया
कार्यालय का पता :
भगवती टायर्स
मन्दिर रोड़, बी. देवघर
देवघर, झारखण्ड–८१४११२
मोबाईल नं – ०९३३४७१२८८२

नाम : श्री ललित कुमार जवानपुरिया
कार्यालय का पता :
जवानपुरिया टेक्सटाइल्स
साकची
जमशेदपुर–८३१००१
मोबाईल नं – ०९४३०३०७५८५

नाम : श्री मधुसुधन सफ्फड़
कार्यालय का पता :
ग्लेक्सी कम्प्युटेक प्रा० लिमिटेड
८, गणेश चन्द्र एवेन्यू, शाह कोर्ट
एक तल्ला, कोलकाता–७०००१३
मोबाईल नं – ०९८३६०६९१४०

नाम : श्री पृथ्वीराज रेणवाँ
कार्यालय का पता :
हाऊस नं – ८ – ३४१ नियर रेलवे गेट
मोरी रोड, मनचरियाल,
अदिलाबाद – ५०४२०८
मोबाईल नं – ०९९४९९२५२५५

नाम : श्री कैलाश काबड़ा
कार्यालय का पता :
काबड़ा भवन
५५, बी. आर. फुकन रोड
गुवाहाटी – ७८१००९, असम
मोबाईल नं – ०९४३५०१२५३९

नाम : श्री नारायण शर्मा
कार्यालय का पता :
शिवा हाऊस, माकुम रोड
पो: सुखान पुरवरी
जिला : तिनसुकिया – ७८६१४६
मोबाईल नं – ०९४३५०३५३१५

असमः गौरवमयी अतीत का एक अध्याय

मारवाड़ी सम्मेलन का प्रथम ऐतिहासिक अधिवेशन

:: ओंकार पारीक ::

कहावत है कि ''संगठन में शक्ति है''। बिना संगठन के कोई भी जाति या समूह न तो सुरक्षित है और न ही अपना विकास कर सकता है। सुरक्षा और सम्मान पाने के लिए संगठन और संगठित होना, दोनों ही अति आवश्यक है। अर्थात् दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। ठीक यही स्थिति बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में मारवाड़ी समाज की रही। समाज बिखराव के कगार पर खड़ा था। (जैसा कि आज जिस हालत में है) समाज में कोई भी एक विशाल संगठन का नेतृत्व न होने की वजह से वह वर्ग और संप्रदाय में बंटा हुआ था। जैसे कहीं पर अग्रवाल सभा, तो कहीं पर माहेश्वरी सभा, जैन सभा, ब्राह्मण सभा। इस तरह समाज में छोटे–छोटे जातीय, उपजातीय संगठन कुकुरमुत्ते की तरह उगने लगे। इन संगठनों से समाज को विशेा लाभ नहीं होता देखकर, समाज के प्रबुद्ध और जागरूक व्यक्तियों ने इस दिशा में चिंतन कर, इस खामी को दूर करने का संकल्प लिया।

देश के उत्तरी पूर्वी सीमा के एक छोर पर बसा डिब्रुगढ़ शहर, स्थापना काल से ही सदैव अपनी जागरूकता और उल्लेखनीय कार्यों के कारण प्रसिद्ध रहा है। भले ही वह सामाजिक दृष्टिकोण हो या शैक्षाणिक अथवा सांस्कृतिक –इस शहर ने सदैव एक अभिभावक की सी भूमिका निभाई है। जिसके प्रमाण स्वरूप हम 'मारवाड़ी सम्मेलन' की स्थापना को ही लें तो हमें यह विदित हो जाता है कि वास्तव में यह शहर अग्रणी है।

समाज के अंदर आपसी भाईचारा और बंधुत्व की कमी को दूर करने के उद्देश्य से डिब्रुगढ़ के समाज में बंधुओं ने १८ अगस्त, १९३५ रविवार को **''आसाम मारवाड़ी चैंबर ऑफ कॉमर्स''** की एक साधारण सभा का आयोजन कर, उसमें असम में निवास करने वाले मारवाड़ी बंधुओं का एक अधिवेशन बुलाने संबंधी विचार–विमर्श किया गया। इस सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी ९ और १० नवंबर, १९३५ को **''असम प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन''** का आयोजन किया जायेगा। सभा में लिये गये निर्णय के अनुसार लखीमपुर जिले के समाजबंधु तन–मन–धन से अधिवेशन की सफलता हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इस हेतु इस अवसर पर एक स्वागत समिति का गठन भी किया गया, जिसमें निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया : –

स्वागताध्यक्ष	– श्री वृद्धिचन्द कर्वा (मै. शालिग्राम राय चुन्नीलाल बहादुर)
उपस्वागताध्यक्ष	– श्री आशारामजी पोद्दार (मै. बीजराज आशाराम)
प्रधानमंत्री	– श्री नौपतराय केड़िया (बाद में रायबहादुर से सम्मानित मै. रामरिखदास गंगाप्रसाद)
संयुक्त प्रधानमंत्री	– श्री रंगलाल खेमानी (रामदेव हीरालाल)
सहकारी मंत्री	– श्री भगवानदास क्याल (डालूराम बैजनाथ)
कोषाध्यक्ष	– मै. भीमराज चौथमल केजड़ीवाल
हिसाब परीक्षक	– श्री फूलचन्द केजड़ीवाल (फूलचन्द कन्हैयालाल)
प्रचार सचिव	– श्री शिवभजन शर्मा
कार्यालय व्यवस्थापक	– श्री जुगलकिशोर केड़िया

इसके अलावा कई विभागीय उपसमितियों का गठन कर सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को दायित्व दिया गया। समिति के प्रचार सचिव श्री शिवभजन शर्मा द्वारा विभिन्न समाचार पत्रों में स्वागत समिति के गठन और निर्णय की जानकारी भेजी गई। जिसमें कोलकाता से प्रकाशित हिन्दी दैनिक 'विश्वामित्र' तथा ८ सितम्बर, १९३५ को साप्ताहिक 'समाज सेवक' में समाचार प्रकाशित हुए।

स्वागत समिति के गठन की प्रक्रिया आरंभ होने के साथ साथ कार्यकर्त्ता और पदाधिकारीगण बड़े ही जोश–खरोश के साथ दिन–रात अधिवेशन की तैयारियों में जुट गये, जिसमें खयालीरामजी हंसारिया, चौथमलजी केजड़ीवाल, जुगलकिशोरजी केड़िया, रायसाहब बालाबक्स हंसारिया, मिश्रीलाल सरावगी, देवीदत्त शर्मा और निहालचन्द जैन आदि विभूतियां थीं। दैनिक विश्वामित्र ने अपने दिनांक ७ नवम्बर, १९३५ के अंक में 'आसाम चलो' शीर्षक से सम्पादकीय लिखकर इस अधिवेशन की सराहना की और इसे मारवाड़ी समाज की एकता में एक क्रांतिकारी कदम बताया। दैनिक ने समाज बंधुओं से आग्रह किया कि वे इस अधिवेशन में अवश्यमेव सम्मिलित हों। समय–समय पर स्वागत समिति की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्तियों के अलावा विज्ञापन भी प्रकाशित किये गये, जिसमें अधिकाधिक संख्या में भाग लेने का अनुरोध किया गया था।

८ नवम्बर से ही आसपास तथा बाहर से आनेवाले प्रतिनिधियों का तांता लग गया था। (स्मरण कि उन दिनों डिब्रुगढ़ शहर लखीमपुर जिले का मुख्यालय था जिसे बाद में विभाजन कर दो अलग–अलग जिले बना दिये गये हैं, अब तीसरा जिला तिनसुकिया भी इसी डिब्रुगढ़ का ही अंग है। पृथक जिला बना दिया गया है) के अलावा शिवसागर, जोरहाट, नगांव, गुवाहाटी एवं सरभोग जैसे छोटे स्थानों से भी समाज बंधु अधिवेशन में भाग लेने

आये। अधिवेशन के सभापति कोलकाता के प्रसिद्ध सालीसीटर श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका को बनाया गया। उद्घाटनकर्त्ता असम में मारवाड़ी समाज के प्रथम वकील श्री केदारमलजी ब्राह्मण, गुवाहाटी निवासी को बनाया गया।

श्री हिम्मतसिंहका जी के साथ कोलकाता से आने वाले समाज के सम्माननीय अतिथियों का दल, जिसमें श्री बसंतलाल मुरारका, श्री बैजनाथ केड़िया, श्री रामकुमार भुवालका, श्री मोतीलाल देवड़ा, पं. भालचन्द्र शर्मा आदि गणमान्य व्यक्ति आसाम एक्सप्रेस से प्रात: साढे छह बजे तिनसुकिया पहुंचे, जहां से तीन घंटे पश्चात डिब्रुगढ़ की रेल पकड़नी थी। तिनसुकिया पहुंचते ही श्री हिम्मतसिंहका जी का भव्य स्वागत हुआ, जिसे देखकर ऐसा लग रहा था, मानो अधिवेशन डिब्रुगढ़ में न होकर तिनसुकिया में हो रहा हो। स्थानीय श्री मुरलीधर जालान के अलावा डिब्रुगढ़ से आये स्वागत समिति की ओर से प्रचार सचिव श्री पं. शिवभजन शर्मा, श्री मिश्रीलाल सरावगी और श्री पुरूषोत्तम केडिया ने माल्यार्पण कर आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। सारा स्टेशन ***'महात्मा गांधी की जय', 'सभापति की जय' 'हिम्मसिंहकाजी की जय'*** आदि के उद्घोा से गूंज उठा। ट्रेन के रवाना होने तक आगंतुक अतिथियों को स्थानीय धर्मशाला में विश्राम के लिए ठहराया गया, तदन्तर ट्रेन अपने निर्धारित समय पर डिब्रुगढ के लिए रवाना हुई। रास्ते में पानीतोला, चाबुआ, डिकम आदि विभिन्न स्थानों पर आसपास के गांवों और चायबागानों के समाज बंधु हाथों में फूल की माला लिये स्वागत के लिए इंतजार में खड़े थे। इनका स्वागत करने वालों में कनोई बंधु रायसाहब हनुमानबक्स सूरजमल के अलावा श्री परशुरामजी कसेरा भी थे।

डिब्रुगढ यह ट्रेन दिन के ११.३० बजे पहुंची, जहां बहुत अधिक संख्या में समाज बंधु आने वाले अतिथियों के स्वागत में प्रतीक्षारत खड़े थे। स्वागताध्यक्ष श्री वृद्धिचन्दजी कर्वा ने अध्यक्ष श्री हिम्मतसिंहकाजी को माल्यार्पण कर, नगर प्रवेश पर उनका हार्दिक स्वागत किया। रंगीली वेश–भूषा में सुसज्जित समाज बंधु लाल–पीली पगड़ी पहने हुए आत्मविभोर हो खड़े थे। स्वागत समिति के अन्य पदाधिकारी सर्वश्री रामेश्वरलाल सहरिया, नौपराय केड़िया, रायबहादुर बालाबक्स हंसारिया, जुगलकिशोर केड़िया के अलावा खयालीरामजी हंसारिया भी उपस्थिति थे। मारवाड़ी समाज के अलावा असमिया और बंगाली संप्रदाय की ओर से श्री लखेश्वर बरूआ, सदानन्द दुआरा 'एडवोकेट' जो कि नगरपालिका के चेयरमैन भी थे, एवं श्री चन्द्रकान्त वकील ने भी आगंतुक अतिथियों का माल्यार्पण के साथ स्वागत किया, जो उस समय मारवाड़ी समाज का अन्य संप्रदायों के साथ सामाजिक एकता और सौहार्द्र का परिचायक था।

श्री जेठमल गाड़ोदिया के नेतृत्व में स्वयंसेवकों के दल ने श्री हिम्मतसिंहकाजी को सलामी दी और फूलों से सजी कार में बैठाया। आपके साथ स्वागताध्यक्ष श्री कर्वा भी बगल में बैठे थे। शहर के मुख्य मार्गो से गुजरता हुआ यह काफिला 'जयकार' के उद्घोष के साथ–साथ नया बाजार, मारवाड़ी रोड, आदि से गुजरा। स्थान–स्थान पर समाज बंधु पान–इलायची, पेयजल और फूल–मालाओं के साथ स्वागत कर रहे थे। फूलों की बरसात हो रही थी। लोगों का कहना है कि 'ऐसा स्वागत तो आज तक किसी का नहीं हुआ'। जुलुस अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचा, जहां आवास स्थल था। लोगों में एक अनोखा ही उत्साह था।

श्री हिम्मतसिंहकाजी की कार के आगे–आगे सुसज्जित हाथी था। इसके पश्चात् स्काउट दल तथा स्वयंसेवक थे। साईकिल पर सवार स्वयंसेवक भी जुलूस के साथ–साथ चल रहे थे। इसके बाद अपार जनसमूह था और पीछे हिम्मतसिंहकाजी की कार तथा अन्य कारें, जिनमें बाहर से आये प्रतिनिधिगण बैठे हुए थे। रास्ते में जगह–जगह गणमान्य व्यक्तियों और समाज की स्थानीय संस्थाओं की ओर से पुष्पवर्षा के साथ स्वागत किया जा रहा था।

रात्रि के ८.३० बजे स्थानीय श्री मारवाड़ी विद्यालय में श्री रंगलालजी खेमानी के सभापतित्व में एक सभा का आयोजन, प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री बसंतलालजी मुरारका के वर्तमान सामाजिक सुधारों पर विचार प्रकट करने के लिए किया गया था। सारा प्रागंण भरा हुआ था। सभा को संबोधित करते हुए श्री मुरारकाजी ने असम के मारवाड़ी समाज की वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा कि 'हम लोग सैकड़ों–हजारों मील की दूरी से चलकर यहां अर्थोपार्जन करने के लिये आये हैं, और उसमें हमने सफलता भी प्राप्त की है, परन्तु वर्तमान में हमें परंपरागत तरीकों के स्थान पर आधुनिक तकनीक और मशीनी उपकरणओं को भी अपनाना होगा। अपने समाज में बढ़ रही फिजूलखर्ची और आडंबर को रोकने का आह्वान करते हुए कहा कि ऐसी प्रथाओं से समाज तबाह होता जा रहा हैं। शिक्षा के विषय में बोलते हुए श्री मुरारकाजी ने इस बात पर गहरा दु:ख प्रकट किया कि डिब्रुगढ जैसे शहर में, जहां समाज बंधु काफी तादाद में होते हुए भी यहां एक हिन्दी हाईस्कूल तक नहीं है, जबकि समाज सर्वसम्पन्न है। हाईस्कूल के न होने से बालकों को उच्च शिक्षा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आपने डिब्रुगढवासियों से आह्वान किया कि वे एक हिन्दी हाईस्कूल की स्थापना करें। साथ ही, आपने लड़कियों के लिए भी उच्चशिक्षा अति आवश्यक है, पर बल देते हुए कहा कि आनेवाले सालों में हमारी माता–बहनें शिक्षित न होने पर एक तो उन्हें गृहस्थी चलाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, दूसरे हमारी बहन–बेटियों के शादी–विवाह में कठिनाइयां आयेंगी। कितनी दूरदर्शिता थी मुरारकाजी के वक्तव्य में, जिसका अंदाजा आज के परिप्रेक्ष्य में देखकर लगाया जा सकता है।'' अस्तु–सामाजिक कुप्रथाओं पर बोलते हुए आपने युवावर्ग से आह्वान किया कि अपने–अपने घरों से पर्दा प्रथा को खत्म करें, जिसके लिए उन्हें किसी विरोध का सामना भी करने पड़े तो वे साहस के साथ करें। आपने समाज से बदलते परिवर्तन के साथ चलने का हवाला देते हुए कहा कि जमाना तेजी के साथ बदल रहा है, यदि हम साथ नहीं चलेंगे तो इस दौड़ में बहुत पीछे रह

जायेंगे। श्री मुरारका ने असम में हिन्दी के प्रचार–प्रसार पर बल देते हुए कहा कि इससे स्थानीय निवासियों के साथ संपर्क और अधिक बढेगा, जब वे हिन्दी पढकर हमारे नजदीक आएंगे। इस सभा को श्री बैजनाथजी केड़िया, भालचन्द्रजी शर्मा, मोतीलालजी देवड़ा के अलावा डिब्रुगढ के श्री पन्नालाल राजपुरोहित ने संबोधित कर समाज को एकजुट होकर रहने तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार व सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने जैसे विषयों पर अपने वक्तव्य दिये। लोगों के उत्साह का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मारवाड़ी विद्यालय का प्रांगण खचाखच भरा हुआ था और समाजबंधु निस्तब्ध हो पूरी एकाग्रता के साथ समाज के इन नेताओं के वक्तव्य सुन रहे थे।

९ नवम्बर १९३५ को प्रात: से ही सारा शहर जग रहा हो, ऐसा लग रहा था। तकरीबन ८.३० बजे स्थानीय मारवाड़ी स्काउटिंग कॉर्प्स ने खेलों का बहुत ही सुंदर प्रदर्शन किया। स्काउटों द्वारा लाठी चलाया जाना देखकर श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका अपने को रोक न सके और उन्होंने स्वयं तथा श्री रामकुमारजी भुआलका ने आपस में लाठी चलाकर अनोखे–अनोखे करतब दिखाये और लाठी से बचाव किस तरह किया जा सकता है, के बारे में जानकारी दी। श्री हिम्मतसिंहकाजी ने कहा कि लाठी चलाना सीखने का तात्पर्य यह है कि समय पर लाठी के वार से अपने को बचाना, न कि किसी पर वार करना।

दोपहर २ बजे से अधिवेशन स्थल पर पूरी चहल–पहल हो रही थी। रंग–बिरंगी वेशभूषा और लाल–पीली पगड़ियां पहने हुए समाज बंधु, युवक और किशोर टोपी पहने हुए एक–दुसरे से गले से गले मिलकर परिचय प्राप्त कर रहे थे। शहर के बोचों– बीच विशाल पण्डाल बनाया गया। बांस और फूस से बने इस पण्डाल को छतरीनुमा सुंदर और आर्काक तरीके से सजाया गया था, चारों ओर शामियाने लगाये गये थे। अधिवेशन की विशालता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि स्थानीय स्तर पर स्वागत समिति के २५० सदस्य तथा २२५ से अधिक स्वयंसेवक बने। ऐसा लग रहा था कि मानो डिब्रुगढ में मारवाड़ी समाज का शायद ही कोई परिवार ऐसा बचा हुआ हो, जिसने इस अधिवेशन में सक्रिय योगदान न दिया हो। बाहर से आये प्रतिनिधियों की संख्या भी ५०० से ऊपर थी, जो उस समय में आयोजित होनेवाले अधिवेशनों को देखते हुए बहुत अधिक कही जा सकती है। स्मरण रहे यह अधिवेशन झालुकपाड़ा में, जहां आज श्री मारवाड़ी हिन्दी स्कूल है, उक्त स्थान पर संपन्न हुआ था। प्रतिठित व्यक्तियों, प्रतिनिधियों, दर्शकों और महिलाओं के लिए पृथक–पृथक बैठने की व्यवस्था की गई थी। यहां तक कि इतर समाज के लोगों को भी आमंत्रित किया गया था, उनके बैठने की भी समुचित व्यवस्था की गई थी।

अधिवेशन का शुभारंभ स्वागत समिति के प्रचार सचिव पं. शिवभजन शर्मा के मंगलाचरण से हुआ। तदन्तर समाज के बच्चों ने ईश्वर वंदना की। तत्पश्चात् बालकों के एक दल ने जलतरंग बजाकर, अधिवेशन स्थल को संगीतमय कर दिया। मंच पर नव–निर्वाचित अध्यक्ष श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका, राजकुमारजी भुआलका, बसंतलालजी मुरारका, भालचन्द्र शर्मा, मोतीलालजी देवड़ा के अलावा तिनसुकिया के रायबहादुर डूंगरमल लोहिया, गुवाहाटी के श्री केदारमलजी ब्राह्मण एडवोकेट, नगर के श्री रंगलालजी खेमानी एवं रायबहादुर तनसुखराय सरावगी आदि विभुतियां विराजमान थीं।

स्वागताध्यक्ष श्री वृद्धिचन्दजी कर्वा ने अपने स्वागत भाण में असम की भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए स्थानीय स्तर पर परस्पर संपर्क बढ़ाने पर जोर दिया। यहां की सामाजिक और व्यापारिक गतिविधियों और समस्याओं पर भी प्रकाश डाला। आपके वक्तव्य का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। अधिवेशन की सफलता हेतु समाज के गणमान्य व्यक्तियों के अलावा कई गैर मारवाड़ी व्यक्तियों और संगठनों की ओर से शुभकामना संदेश भेजे गये, जिनसे यह साबित होता है कि उन दिनों मारवाड़ी समाज का इतर समाज के साथ कैसा मधुर संबंध था। संदेश भेजने में कोलकाता से सर्वश्री देवीप्रसाद खेतान, सर बद्रीदास गोयनका, सीताराम सेकसरिया, भागीरथ कानोड़िया, सिलहट से श्री मुरलीधरजी अग्रवाल, आसाम एसोसिएशन–गुवाहाटी के श्री अम्बिका प्रसाद चौधरी, राय कालीचरण सेन–सभापति आसाम डोमीसाईल्ड एण्ड सेटलर्स एसोसिएशन–धुबड़ी, मो. फखरूद्दीनअली अहमद बार एट लॉ गुवाहाटी (बाद में देश के राष्ट्रपति बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ), मंत्री–असम हिन्दू सम्मेलन, संपादक 'असमिया', गुवाहाटी, संपादक–दैनिक विश्वामित्र–कोलकाता आदि।

सभा की कार्यवाही आरंभ होने के पूर्व सर्वप्रथम गुवाहाटी के श्री केदारमलजी ब्राह्मण एडवोकेट ने श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंह का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया, और अनुमोदन जोरहाट के श्री महादेवजी मिठड़ीवाला एवं समर्थन डिब्रुगढ़ के श्री रामेश्वरजी सहरिया ने किया। अधिवेशन स्थल पर उपस्थित सभी प्रतिनिधियों ने करतल ध्वनि से स्वागत कर नव–निर्वाचित अध्यक्ष श्री हिम्मतसिंहका के चयन पर अपनी स्वीकृति प्रदान की। श्री बसंतलालजी मुरारका ने श्री हिम्मतसिंहकाजी का परिचय देते हुए इनकी सामाजिक, राट्रीय और अन्यान्य गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए इनके व्यक्तित्व की सराहना की।

सभापति श्री प्रभुदयालजी ने अपना अध्यक्षीय भाण दिया, जिसमें उन्होंने समाज की तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक स्थिति पर विस्तृत प्रकाश डाला।

सभापति के भाण को लगभग दो घंटे तक प्रतिनिधियों ने बड़े ही धैर्य और शांतिमय वातावरण में सुना। सभी ने उनके भाषण पर हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। असमिया समाज की ओर से प्रसिद्ध सरकारी वकील श्री सदानन्द दुआरा, जोरहाट के श्री सिराजुद्दीन अहमद के अलावा श्री लखेश्वर फुकन एवं अन्य कई प्रतिठित व्यक्तियों ने अध्यक्षीय भाण पर प्रकाश डाले गये विचारों पर संतोा प्रकट किया और अध्यक्ष की विद्वता की भूरि–भूरि प्रशंसा की। श्री सदानन्द दुआरा ने असम की परिस्थितियों के संदर्भ में प्रकाश

डालते हुए कहा कि असमिया समाज को समय–समय पर मारवाड़ी समाज की ओर से पूरी सहायता और मार्गदर्शन मिला है।

श्री सिराजुद्दीन अहमद ने भी श्री दुआरा के वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए कहा कि पहले यहां पर केवल जंगल ही जंगल था। बर्मी लुटेरे हमें दिन–रात लूटते और तंग करते थे तथा हमें मार–मारकर कट देते थे। हमने कभी नहीं सोचा था कि असम का भी विकास होगा और हमें संतोा के साथ जीने का अवसर मिलेगा। मारवाड़ी समाज की सराहना करते हुए श्री अहमद ने कहा कि मारवाड़ियों के यहां आने के पश्चात् उद्योग–व्यापार में आशातीत प्रगति हुई है। चाय, सिल्क, कोयला, तेल आदि बाहर जाने लगा है और प्रांत में बाहर से बहुत अधिक मात्रा में धन आने लगा है। (नोट–आज के असमवासी इस टिप्पणी पर गौर से ध्यान दें–लेखक)। सच पूछा जाये तो मारवाड़ी समाज का हमारी प्रांत की समृद्धि बढाने में काफी हाथ रहा है। हम इस समाज को बड़े ही सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

श्री लखेश्वर फुकन ने भी मारवाड़ी समाज की सराहना करते हुए कहा कि इस समाज के कारण ही असम का विकास हुआ है। राय साहब तनसुखराय सरावगी ने स्थानीय समाज के प्रति गहरा प्रेम प्रकट करते हुए कहा कि कुछ मनचले व्यक्ति हैं, जो प्रांतीयता का विष–वमन कर रहे हैं, जिसके संबंध में स्थानीय समाज के नेताओं द्वारा अपना स्पष्टीकरण अवश्य करना चाहिए।

समय काफी हो गाय था। अत: केवल बाहर से आये प्रतिनिधियों द्वारा अपने–अपने क्षेत्र के प्रतिनिधियों का चयन किया गया ताकि रात्रि में भोजनोपरांत होने वाली विाय निर्वाचनी की बैठक में वे भाग ले सकें। इस प्रकार प्रथम दिवस की कार्यवाही समाप्त हुई। श्री बसंतलालजी मुरारका तथा श्री रामकुमारजी भुआलका किन्हीं आवश्यक कार्यवश अगले कार्यक्रमों के लिए रूक नहीं सके और वे पहले दिन की कार्यवाही समाप्त होने के साथ–साथ वापस कोलकाता चले गये।

१० नवम्बर, १९३५ – आज अधिवेशन का मुख्य आकर्षण खुला अधिवेशन का शुभारंभ नव–निर्वाचित अध्यक्ष श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ। चूंकि उन दिनों राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण था, जिसके कारण समाज में भी इस तरह की अड़चनें तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने लगा रखी थी। अत: खुले अधिवेशन में अधिकांश प्रस्ताव राजनैतिक और व्यापारिक महत्व के पारित किये गये। हां, समाज में शिक्षा के प्रचार–प्रसार और पर्दा निवारण को भी इस दायरे में बांध लिया गया था। समाजबंधुओं को एकता के सूत्र में बांधकर उन विषम परिस्थितियों का सामूहिक सामना करने के लिए यह पहला प्रयास किया गया था।

कुल मिलाकर यह अधिवेशन बहुत ही सफल रहा। इसका अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि १५०० से अधिक प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया था। यहां यह कहना भी समीचीन होगा कि पूरे देश में मारवाड़ी समाज का यह पहला और अनूठा सम्मेलन था। इस अधिवेशन की प्रेरणा से ३० दिसम्बर, १९३५ को कोलकाता में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन अनुटित हुआ। डिब्रुगढ़ के समाज– बंधुओं द्वारा समाजिक एकता के लिए जो अलख जगाई गई थी, उसका प्रभाव एक बार सारे देश में पड़ा और सभी स्थानों पर सम्मेलन का एकता आंदोलन फैल गया। परन्तु दु:ख और विडंबना की बात है कि आज के परिप्रेक्ष्य में हम देखते हैं तो सम्मेलन अंतिम सांसें गिनता नजर आता है। क्या हुआ अभी कोई आपत्ति–विपत्ति हो गई, तब इसे कृत्रिम श्वास देकर जिन्दा किया जाता है।

अधिवेशन की अन्य उपलब्धियों के अलावा दो महत्वपूर्ण उपलब्धियां और रहीं। प्रथमत: श्री मारवाड़ी हिन्दी हाई स्कूल, डिब्रुगढ़ की स्थापना। दूसरे, कन्या पाठशाला का निर्माण। कन्या पाठशाला की स्थापना बड़े ही रोचक और आज के परिप्रेक्ष्य में कहें तो फिल्मी अंदाज से हुई। पंडित शिवभजन शर्मा के प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया जा चुका था। तब १०–१२ साल की दो बालिकाओं ने मंच पर आकर समाज बंधुओं से निवेदन किया कि आपने लड़को की उच्च शिक्षा की व्यवस्था तो कर लीं, परन्तु हम लड़कियों के लिए प्राथमिक स्तर तक की भी कोई व्यवस्था नहीं है। क्या समाज हमें अनपढ़ ही रखना चाहता है?

इन मासूम बच्चियों की इस अपील का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसी के फलस्वरूप तत्काल आठ हजार रुपये कन्या पाठशाला हेतु एकत्रित किये गये। धन्य हैं वे गुमनाम बालिकाएं, जिन्होंने नारी शिक्षा में अमूल्य योगदान दिया, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

उल्लेखनीय है कि मारवाड़ी हिन्दी हाईस्कूल को न केवल असम बल्कि पूर्वोत्तर का पहला हिन्दी हाईस्कूल होने का गौरव प्राप्त है। इसी तरह कन्या विद्यालय भी प्रदेश का प्रथम हिन्दी बालिका विद्यालय है।

डिब्रुगढ़ नगरपालिका ने भी इस अवसर पर एक उल्लेखनीय कार्य किया। नगरपालिका द्वारा सम्मेलन के नव–निर्वाचित अध्यक्ष और प्रसिद्ध सालीसीटर श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका का नागरिक अभिनन्दन किया गया। स्मरण रहे कि श्री हिम्मतसिंहकाजी डिब्रुगढ़ नगरपालिका के इतिहास में प्रथम गैरसरकारी नागरिक रहे हैं, जिनका नगरपालिका ने नागरिक अभिनंदन कर उन्हें मानपत्र भेंट किया था। इसके पहले नगरपालिका केवल सरकारी अथवा अन्य प्रशासनिक अधिकारियों का अभिनंदन करती थी।

अधिवेशन के अवसर पर बाहर से आये हुए गणमान्य अतिथियों और प्रतिनिधियों के मनोरंजनार्थ स्थानीय श्री मारवाड़ी नाट्य समिति द्वारा अपने रंगमंच (टाकी हाऊस) पर महामाया नामक नाटक का प्रदर्शन किया गया, जिसे सभी ने सहारा। इस नाटक में भाग लेने वाले प्रमुख कलाकारों में सर्वश्री इमनादत्त जालान, झाबरमल केशान, कमला प्रसाद केशान, नन्दलाल खेमका और गंगाराम बुखरेड़िया (अब सभी स्वर्गीय) आदि विभूतियों ने भाग लिया था।◆

लोक-उद्धारक भगवान् महावीर

:: हनुमान सरावगी ::

''भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित, जैन-धर्म के दशलक्षण – उत्तम क्षमा, उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम सत्य, उत्तम शौच, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन्य एवं उत्तम ब्रह्मचर्य''

भगवान् महावीर सही अर्थो में लोक–उद्धारक थे। उन्होंने जो भी सन्देश दिये तथा धर्म की जो भी व्याख्या की, वह सर्व साधारण लोगों के लिए उन्हीं की भाषा में की। वे लोक–पुरुष थे जिसे अंग्रेजी में मैन ऑफ दी मासेज कहते हैं।

भगवान् महावीर तत्कालीन सामाजिक, नैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों की उपज थे। जब उनका प्रादुर्भाव हुआ, समाज में विमता, असहनशीलता, अनाचार, झूठ, हिंसा और स्वेच्छाचारिता का बोलबाला था। मानवीय मूल्यों की कोई पूछ नही थी। इस घोर त्राहि–त्राहि से भरे परिवेश ने महावीर की अन्तरात्मा तथा बुद्धि को झकझोर डाला और फिर इन सभी बुराइयों को मिटाने के लिए उन्होने जो सन्देश दिये, वे लोकव्यापी और लोकजयी होकर सर्वयुगीन, शाश्वत हो गये।

भगवान् महावीर ने प्रारम्भ से ही बिल्कुल साधारण जनों को अपनाया और बौद्धिक तथा वैचारिक काया–कल्प करके उन्हें समाज एवं लोक के लिए आदर्श पुरुषों के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

नेता की, वह चाहे धर्म के क्षेत्र में हो या अन्य क्षेत्रों में, यही विशेषता है कि वह अपने आदर्श अपने अनुयायियों के रूप में मूर्त्त कर दे। भगवान् महावीर ने ऐसा ही किया। यद्यपि भगवान् महावीर के उपदेशों की दार्शनिक व्याख्या करते हुए उन्हें बहुत गूढ़ बना दिया गया है, पर यथार्थ में वे बहुत सरल, सहज और सर्वसाधारण जन के लिए सुगम हैं। भगवान के उपदेशों का मूल उद्देश्य भी सामान्य जन के जीवन को सुन्दर, सुखी तथा संतुलित बनाना है, जिससे पूरा समाज भी वैसा ही बन सके।

हमारे लिए भगवान् महावीर ने पंच महार्वतों का उपदेश दिया। ये पंच महार्वत हैं सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य एवं अहिसा। इन पाँचों महार्वतों की परिधि में समाज एवं व्यटि के सभी आचरण आ जाते हैं और यदि इन महार्वतों को जीवन में धारण कर लिया जाय तो, निस्संदेह लोग बहुत सुखी हो जायेंगे, विषमताएँ मिट जायेंगी और उनमें अन्तर्कलह भी नहीं रहेगी। यह इसलिए संभव है कि भगवान् महावीर ने व्यष्टि की आधार–बुद्धि पर ही जोर दिया। लोक–परलोक, आत्मा–परमात्मा की दुरूहता में वे अधिक नहीं उलझे, हालाँकि इन विषयों में भी उनकी गति थी और उनका सुस्पष्ट चिन्तन और निकर्ष था।

भगवान के पंच महार्वतों में सत्य प्रथम है। सत्य के विाय में अधिक कहने की आवश्यकता ही नहीं है। सभी जानते हैं कि जीवन में सत्य का क्या महत्व है सत्य को अंगीकार करके व्यक्ति ही नहीं, समाज और समग्र राष्ट्र भी प्रामाणिकता प्राप्त करते हैं। सत्यविहीन की कोई प्रामाणिकता नहीं होती। अत: सत्य के महार्वत का उपदेश देकर भगवान् महावीर ने सामान्य जन को अपने जीवन मे प्रामाणिक, विश्वसनीय होने का उपदेश दिया।

भगवान् का दूसरा महार्वत, अस्तेय भी सर्वसाधारण के लिए है। अस्तेय अर्थात चोरी नहीं करना। इस वंत के अनुपालन के लिए भगवान् का यहाँ तक कहना था कि क्षेत्र कुरेदने की सीक जैसी तुच्छ चीज का भी लोभ नहीं करना चाहिए। इस महार्वत का सुप्रभाव ऐसा है कि समाज में परस्पर विश्वास की भावना जागृत होती है तथा स्वत: स्फूर्त एक नैतिक अनुशासन का निर्माण होता है। यह सामान्य जनजीवन में संतुलन के लिए आत्मनिर्भरता का भी अनिवार्य महार्वत है।

अपरिग्रह महार्वत के रूप में भगवान् ने आवश्यकता से अधिक वस्तुओं के संग्रह की प्रवृत्ति को दूर करने की सीधी–साधी प्रक्रिया है। अपरिग्रह महार्वत के सामाजिक लाभ तो हैं ही, इससे आर्थक संतुलन तथा शांति भी स्थापित होती है। यह तो सीधी–साधी बात है कि यदि आर्थिक शान्ति एवं संतुलन हो तो सामान्य जन की सुख–शान्ति भी बनी रहेगी।

भगवान के ये तीन महार्वत तो सामान्य जन–जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक नैतिकता से सम्बन्ध रखते हैं।

समाज में विषय–लोलुपता अर्थात भोग–विलास और वासना के नियत्रंण के लिए उन्होंने ब्रह्मचर्य का मनोवैज्ञानिक महार्वत बताया। विषय–इच्छा मनुय की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसकी अधिकता वासना है जो सारे जीवन को स्खलित और विच्युत कर देती है। ब्रह्मचर्य का अर्थ आत्मसंयम और इन्द्रिय–निग्रह है जो मन की शांति तथा चित्त की स्थिरता के लिए बहुत ही आवश्यक

है। इनसे मनुय की संकल्प–शक्ति तथा कर्म–शक्ति सुदृढ़ होती है।

अन्तिम अहिंसा महार्वत के रूप में भगवान् महावीर ने बहुत ही सरल आध्यात्मिक उपदेश दिया है। अहिंसा अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति स्नेह और दया का भाव। सही अध्यात्म यही है। इसी में शांति, सौन्दर्य एवं आनन्द है।

भगवान् महावीर के उपदेशों की विशोता है कि वे सामाजिक–आर्थिक आचारों पर ही बल देते हैं। अर्थात् उनके उपदेश दिन–प्रतिदिन के सांसारिक कार्यों में व्यस्त रहने वाले सर्वसामान्य जन के लिए है।

वास्तव में भगवान् के ये पाँचों महार्वत मानव–मात्र की आचार संहिता है। इन पाँच महार्वतों का आधार रखकर भगवान् ने सामान्य जन–जीवन को प्रभावित करने वाले तीन अन्य क्षेत्रों में भी सामान्य जन का

मार्ग–दर्शन किया है। ये क्षेत्र है– नारी की प्रतिष्ठा, सामाजिक समता और आडम्बर तथा मिथ्याचारों का उन्मूलन।

भगवान् महावीर ने नारी की प्रतिष्ठा पर विशेा बल दिया है। उन्होंने नारी को कभी गौण तथा नरक का मूल नहीं माना और आध्यात्मिक साधना तथा प्रवज्ञा का अधिकार उसे पुरुषों के बराबर ही दिया। उन्होंने स्वयं चम्पापुरी, जो वर्तमान भागलपुर है, के नरेश दधिवाहन की बेटी चन्दना को श्रमण दीक्षा दी।

भगवान् महावीर सामाजिक समता के प्रबल प्रतिपादक थे। उन्होंने वर्ण–व्यवस्था को उसके रूढ़ अर्थ में स्वीकार नहीं किया, बल्कि उसका विरोध ही किया। उनका मत था कि मानव–मात्र समान है। मानव–मानव के बीच जन्म, जाति, लिंग, व्यवसाय तथा समानता–विामता के आधार पर ऊँच–नीच के भेद का उन्होंने विरोध किया। इससे सामान्य जन भी समाज में अपनी स्थिति के प्रति आश्वस्त तथा जागरुक हुए।

भगवान् महावीर ने बाहरी आडम्बरों तथा मिथ्या आचारों का भी घोर विरोध किया। उनके काल में यज्ञ आदि बाहरी अनुष्ठानों एवं कार्यक्रमों की बाढ़ थी। उनका विरोध करते हुए भगवान् ने कहा कि बिना आत्म–शोधन के बिना जागृत संस्कारों के आडम्बर एवं बाहरी क्रियाएँ निरर्थक हैं। सीधे–साधे शब्दों में कहें तो, भगवान् महावीर ने आचरण एवं व्यवहार की सत्यता पर ही विशेष बल दिया।

यह तो भगवान् की व्यवहारिक जगत की बात रही। वैचारिक क्षेत्र में भी उन्होंने स्याद्वाद जैसे दर्शन का प्रवर्तन किया जो विश्व की किसी भी वस्तु, किसी भी विचार–धारा को नकारता नहीं। यह सह–अस्तित्व का मूलमंत्र है।

विचारों के क्षेत्र में अपने–अपने मत और सिद्धान्तों के प्रति प्रवर्तकों तथा उनके अनुयायियों में विशेष आग्रह होता है जो दुराग्रह भी बन जाता है। पर भगवान् ने स्यादवाद के द्वारा वैचारिक सहनशीलता और उदारता का आदर्श स्थापित किया।

मानव–जीवन को प्रभावित और प्रेरित करने वाले अनेक महापुरुष अवतरित हुए हैं। उन्होंने मनुय को बहुत ऊँचा उठाया। कर्म, विचार एवं दर्शन के क्षेत्र में उनकी प्रस्थापनाओं ने क्रांतियाँ ला दी। मानव–जीवन को सुन्दर और श्रेयस्कर बनाया। उनके चिन्तन और उपदेश भी सर्वयुगीन एवं शाश्वत हैं। पर उनकी प्रस्थापनायें कठिन एवं गूढ़ शब्दावलियों में थी जिनकी सर्वसामान्य की समझ के लिए व्याख्या करनी पड़ी।

भगवान् महावीर ने भी गूढ़ विषयों को छुआ है और उनका चिन्तन भी बड़ा मौलिक और प्रखर है। पर उनकी दृटि तत्त्वज्ञ विद्वानों पर नहीं, सामान्य जन पर थी जिनका उद्धार एवं कल्याण करने की आवश्यकता थी। अपने उपदेश भी उन्होंने उसी सामान्य जन के लिए उसी की बोली में दिये। अपने गणधर भी उन्होंने सामान्य जन के बीच से लिये, सामान्य जन ही लिये। भगवान् महावीर के चरित्र का यह बहुत ही अद्‌भुत तथा प्रेरक पक्ष है।

सम्पूर्ण मानव–समाज के लिए भगवान् महावीर का एक ही मूल मंत्र था–आत्मानुशासन और सृटि के सभी प्राणियों के प्रति आत्म–भाव। आत्मानुशासन की आवश्यकता तो व्यक्ति ही नहीं, समाज और राष्ट्र के जीवन में भी है। तभी सफलता सम्भव है। तभी शान्ति, सुख, समृद्धि और मानवता के स्थायी मूल्यों एवं आदर्शों की प्राप्ति होगी। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जो सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के ही रूप में तथा सभी प्राणियों में अपनी आत्मा को देखता है, वह ईर्ष्या नहीं करता।

यह कहना प्रासंगिक होगा कि यद्यपि भगवान् वीतराग थे और उनका तात्त्विक उपदेश भी वैराग्य, वीतरागिता का ही है। किन्तु उन्होंने सर्वसाधारण को कर्मचेतना से विरत करने का कोई उपदेश नहीं दिया। सामान्य जन के लिए उनका उपदेश यही था कि संगत आचारण करते हुए चलो। अपने दायित्वों एवं सम्बन्धों का निर्वाह करते हुए चलो.। पर चलो ऐसे कि स्वयं तो सुखी, शांत रहो ही, और सभी भी सुखी और आनन्दित रहें। संपूर्ण समाज में परस्पर प्रेम एवं स्नेह की धारा बहती रहे। कोई किसी के लिए अभाव और दुख का कारण नही बने।

लोक–उद्धारक भगवान् महावीर को कोटि–कोटि नमन।

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

– स्वास्तिक हाउस, गाँधी चौक, अपर बाजार, रांची–834001

राजस्थानी रै बिना क्यांरो राजस्थान

–:: डॉ. मदन गोपाल लढ़ा ::–

मायड़ भाषा राजस्थानी की संवैधानिक मान्यता का मुद्दा राजनीति के गलियारों में उलझ कर रह गया है। गत साठ वर्षों से गांधीवादी तरीके से चल रहे शांतिपूर्ण जन आंदोलन के प्रतिफल के रूप में थोथे आश्वासनों के अलावा कुछ भी नहीं मिला है जिससे अब राजस्थानी मोट्यारों का धैर्य जबाब देने लगा है। गौरतलब है कि अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने ही २५ अगस्त २००३ को प्रदेश की विधानसभा से राजस्थानी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का संकल्प पारित कर केन्द्र को भिजवाया था। अब केन्द्र व राज्य दोनों में कांग्रेस सत्तारूढ़ है। केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री संसद के अन्दर व बाहर कई मर्तबा राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता का प्रस्ताव रखने का भरोसा दिला चुके हैं। प्रदेश की जनता उस दिन का बेसब्री से इन्तजार कर रही है जब उनकी जबान पर लगा ताला खुल जाएगा व राजस्थान की मायड़ भाषा को देश की २२ अन्य भाषाओं की तरह भारतीय संविधान में बराबरी का दर्जा हासिल होगा।

गत विधानसभा व लोकसभा चुनावों में राजस्थानी का मुद्दा केन्द्र में रहा है। अखिल भारतीय राजस्थानी मान्यता संघर्ष समिति के बेनर तले चल रहे आन्दोलन को व्यापक जन समर्थन मिला है। रचनाधर्मियों के अलावा बड़ी संख्या में विद्यार्थी–युवा वर्ग इस संघर्ष में भागीदार बना है। प्रदेश के कई स्थानों पर ''भासा नी तो वोट नीं'' के नारे के साथ प्रदर्शन हुए। बीकानेर में संप्रग अध्यक्ष सोनिया गांधी की सभा में मुंह पर सफेद पट्टी बांध कर मान्यता नहीं मिलने की पीड़ा का इजहार किया गया। चुनावी समर में उतरे प्रत्याशियों से भाषाई मान्यता के मुद्दे पर जवाब तलब किया गया। उम्मीदवारों ने भी राजस्थानी की मान्यता के प्रति अपनी निष्ठा जताई तथा मायड़ भाषा में प्रचार कर मतदाताओं को लुभाने का प्रयास किया। मतदान पूर्व जनमत संबंधी चर्चाओं में राजस्थानी की मान्यता का मुद्दा शीर्ष वरीयता में उभर कर सामने आया। कांग्रेस व भाजपा के अलावा बसपा, इनेलो, जद आदि दलों के नेताओं ने प्रत्येक राजस्थानी के आत्मसम्मान हेतु मायड़ भाषा की मान्यता का पुरजोर समर्थन किया।

अपने पुरातन साहित्य, समृद्ध व्याकरण, वृहत शब्दकोश एवं राजस्थानी भाषी विशाल जनसमुदाय के कारण राजस्थानी पूर्ण रूप से एक वैज्ञानिक भाषा है। भाषा–भाषियों की दृष्टि से राजस्थानी का भारतीय भाषाओं में सातवाँ तथा विश्व भाषाओं में सोलहवाँ स्थान है। राजस्थान के अलावा गुजरात, पंजाब, हरियाणा व मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र के लोग रोजमर्रा की जिन्दगी में राजस्थानी भाषा का प्रयोग करते हैं। पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों में राजस्थानी सहजता से बोली–समझी जाती है। वहाँ राजस्थानी भाषा से नाता रखने वाली कई संस्थाएँ भी सक्रिय हैं। वर्ष १९९४ में पाकिस्तान के राजस्थानी लेखकों का एक दल जोधपुर से प्रकाशित 'माणक' पत्रिका के कार्यालय आया। राजस्थानी लोक साहित्य की विशाल सम्पदा है जिसमें यहाँ के लोकाचार, इतिहास, संस्कार व राग–रंग की थाती सुरक्षित है। 'ढोला मारू रा दूहा' तथा 'वेली क्रिसश रूकमणी री' जैसी उत्कृष्ट सतियों की रचना राजस्थानी में हुई है। जिस भाषा में २० हजार प्रकाशित ग्रंथ तथा तीन लाख से अधिक हस्तलिखित पांडुलिपियां मौजूद हैं। आठवीं सदी के ऐतिहासिक साक्ष्यों में जिसकी चर्चा मिलती है। जार्ज ग्रियर्सन, डा. एल. पी. टेस्सीटोरी, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे विद्वानों ने बगैर किसी विवाद के जिसे समर्थ भाषा स्वीकार किया है, उस भाषा को मान्यता के लिए ६३ वर्षों का इन्तजार करना पड़े यह हमारे समय की एक विडम्बना नहीं तो भला क्या है?

राजस्थानी एक स्वतंत्र व समर्थ भाषा है। जब यहां के लोग हिन्दी को प्रथम राजभाषा स्वीकार करते हुए द्वितीय राजभाषा के रूप में अपनी मायड़ भाषा की मांग करते हैं तो भला ऐतराज क्यों ? जबकि हिन्दी भाषी हरियाणा में पंजाबी व दिल्ली में पंजाबी व उर्दू को संयुक्त रूप से द्वितीय भाषा का दर्जा दिया गया है। संसार की समस्त भाषाओं की अपनी बोलियां हैं, जो उसकी समृद्धि की सूचक मानी जाती हैं। जिस तरह अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, ब्रज, बांगरू, कन्नोजी, बुंदेली व खड़ी बोली का समूह हिन्दी की धरोहर है वैसे ही

बागड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी, मेवाती, मारवाड़ी, मालवी आदि बोलियां राजस्थानी का गौरव बढ़ाती है। बोलियों की विविधता के बावजूद राजस्थानी का एक मानक स्वरूप तय है जो पूरे प्रदेश में सहज स्वीकृत है।

राजस्थानी जीवंत भाषा है। भक्ति, ज्ञान, श्रृंगार व वीरता से परिपूर्ण राजस्थानी साहित्य में हमारे देश के एक हजार वर्षो के राजनैतिक– सांस्कृतिक–धार्मिक अतीत के साक्ष्य सुरक्षित हैं। जैन धर्म के मनीषी साधुओं ने अपनी ज्ञान राशि को राजस्थानी भाषा में रचित ग्रन्थों में संजोया है। महाराणा प्रताप, रामदेवजी, तेजाजी, करणी माता, गोगाजी, जाम्भोजी, जसनाथ जी, मीराबाई, आचार्य तुलसी, जैसे भक्तों– शूरों की मातृभाषा राजस्थानी ही है। केन्द्रीय साहित्य अकादमी राजस्थानी को स्वतंत्र भाषा मानते हुए प्रतिवर्ष श्रेष्ठ पुस्तकों पर पुरस्कार देती है। राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित स्वायण संस्था है। राजस्थानी में दर्जनों पत्रिकाएँ नियमित प्रकाशित होती हैं। राजस्थानी संगीत की कर्णप्रिय धुनें सात समन्दर पार भी सुनी जाती हैं। राजस्थानी सिनेमा भी धीरे–धीरे अपना प्रभाव जमा रहा है। राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश के दर्जनों वश्वविद्यालयों में राजस्थानी साहित्य पर शोध कार्य हुए हैं तथा आज भी शोध ार्थी राजस्थानी साहित्य सम्पदा से हरदम कुछ नया प्राप्त करते हैं। इन्टरनेट पर भी इन दिनों राजस्थानी भाषा व साहित्य छा रहा है। नेट के माध्यम से दुनिया भर का राजस्थानी समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत से नाता जोड़ रहा है। वेबपत्रिका नेगचार, जनवाणी परलीका, ओळखांण, आपणो राजस्थान, मनवार आदि दर्जनों राजस्थानी वेब पत्रिकाएं हैं जो राजस्थानी को विश्व व्यापक पहचान दिला रही हैं। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि राजस्थानी को मान्यता नहीं मिलने की मूल वजह राजनैतिक इच्छाशक्ति का अभाव है। प्रदेश के सांसद इस गंभीर मुद्दे को मुखर ढंग से उठाने में नाकाम रहे हैं। सवाल केवल भाषा का नहीं है बल्कि हमारे वजूद का है। इस तरह एक ओर यह प्रदेश की सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न है वहीं युवा वर्ग राजस्थानी को मान्यता नहीं होने को अपनी बेरोजगारी का प्रमुख कारण मान रहा है। अब समय आ गया है कि राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता देकर ८ करोड़ लोगों की भावनाओं का सम्मान किया जाए। राजस्थानी राजस्थान की तो अस्मिता है ही, देश का भी गौरव है।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के शब्दों में कहें तो

राजस्थानी रै बिना क्यांरो राजस्थान।

पता – 144, लढ़ा निवास, महाजन, बीकानेर

लघु कथा :

समाधान

एक बूढा व्यक्ति था। उसकी दो बेटियां थीं। उनमें से एक का विवाह एक कुम्हार से हुआ और दूसरी का एक किसान के साथ।

एक बार पिता अपनी दोनों पुत्रियों से मिलने गया। पहली बेटी से हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार हमने बहुत परिश्रम किया है और बहुत सामान बनाया है। बस यदि वर्षा न आए तो हमारा कारोबार खूब चलेगा।

बेटी ने पिता से आग्रह किया कि वो भी प्रार्थना करे कि बारिश न हो।

फिर पिता दूसरी बेटी से मिला जिसका पति किसान था। उससे हालचाल पूछा तो उसने कहा कि इस बार बहुत परिश्रम किया है और बहुत फसल उगाई है परन्तु वर्षा नहीं हुई है। यदि अच्छी बरसात हो जाए तो खूब फसल होगी। उसने पिता से आग्रह किया कि वो प्रार्थना करे कि खूब बारिश हो। एक बेटी का आग्रह था कि पिता वर्षा न होने की प्रार्थना करे और दूसरी का इसके विपरीत कि बरसात न हो। पिता बड़ी उलझन में पड़ गया। एक के लिए प्रार्थना करे तो दूसरी का नुक्सान। समाधान क्या हो?◆

कृतज्ञता

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपनी असीम उदारता के कारण कंगाल हो चुके थे । एक ऐसा समय भी आया जब उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह पत्रों का उत्तर भेज सके । जो पत्र आते थे, उनका उत्तर लिखकर लिफाफे में बन्द करके भारतेन्दुजी पटल पर रख देते थे । उन पर टिकट लगाने के लिए पैसे हों तो पत्र भेजे जाएँ । उनकी पटल पर पत्रों का ढेर जमा हो गया । भारतेन्दुजी के किसी मित्र ने उन्हें पाँच रुपयें के टिकट लाकर दिए और तब वे पत्र डाक में डाले गए ।

धीरे–धीरे भारतेन्दु बाबू की आर्थिक स्थिति कुछ सुधरी । अब जब भी वह मित्र मिलते, तभी भारतेन्दुजी जबरदस्ती पाँच रुपये उनकी जेब में डाल देते और कहते, ''आपको स्मरण नहीं, आपके पाँच रुपये मुझ पर ऋण है ।'' अन्त में मित्र ने एक दिन कहा, ''मुझे अब आपसे मिलना बन्द कर देना पड़ेगा ।'' भारतेन्दु बाबू की आँखे भर आयीं । बोले, ''भाई, तुमने ऐसे समय मुझे पाँच रुपये दिये थे कि मैं जीवन भर प्रति दिन तुम्हें पाँच रुपये देता रहूँ, तो भी तुम्हारे ऋण मुक्त नहीं हो सकता।'' ◆

हार की जीत :

सुदर्शन की कहानी

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्–भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख–देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब–कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे–से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हें ऐसी भ्रान्ति सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ–दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते–होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, ''खडगसिंह, क्या हाल है?''

''खडगसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, आपकी दया है।''

''कहो, इधर कैसे आ गए?''

''सुलतान की चाह खींच लाई।''

''विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!''

''कहते हैं देखने में भी बहुत सुँदर है।''

क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।

बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैंकड़ों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की–सी अधीरता से बोला, परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?

दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायु–वेग से उडने लगा। उसकी चाल को देखकर खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी भी। जाते–जाते उसने कहा, बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति क्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे। संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर से आवाज आई, ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।

वहाँ तुम्हारा कौन है?

दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका–सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था।बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, जरा ठहर जाओ।

खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।

परंतु एक बात सुनते जाओ। खड़गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।

बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल घोड़ा न दूँगा।

अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन–दुखियों पर विश्वास न करेंगे। यह कहते–कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, इसके बिना मैं रह न सकूँगा। इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन–भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दीन–दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे–धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन–मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार–बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार–बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, अब कोई दीन–दुखियों से मुँह न मोड़ेगा।◆

युगपथ चरण :

श्री श्याम मंदिर स्थल (आलमबाजार)

से निकाली गई भव्य शोभायात्रा

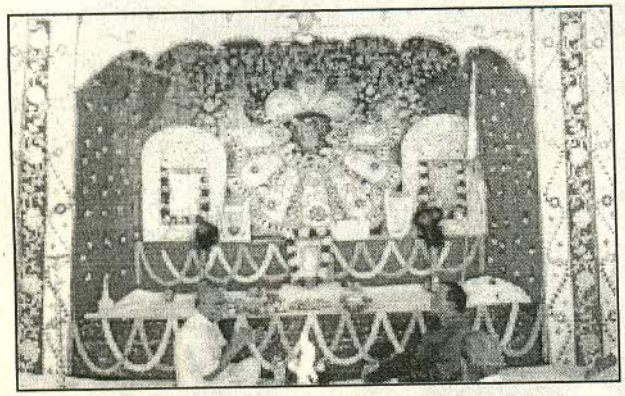

कोलकाता : आलमबाजार श्री श्याम ध्वजा मंडल द्वारा प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री श्याम प्रभु की निशान शोभायात्रा बीते रविवार, १४–०२–२०१० को सम्पन्न हुई। प्रारम्भ में निर्माणाधीन श्री श्याम मंदिर स्थल ११३, सूर्य सेन रोड, नारायणी सिनेमा हॉल के निकट, आलम– बाजार, कोलकाता–३५ में सुबह १० बजे से भजन– अमृतवर्षा का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया।◆

गत जनवरी मास में श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति, हामड़ागाछी में आयोजित वैवाहिक परिचय सम्मेलन

बोर्ड के सदस्य मनोनीत

श्री बंशीलाल बाहेती को केन्द्रीय सरकार ने राष्ट्रीय लघुतम, लघु एवं मध्यम उद्योग बोर्ड का सदस्य मनोनीत किया है। यह बोर्ड इस क्षेत्र की औद्योगिक व सेवारत सभी इकाइयों के लिए नीति निर्धारण व विकास की रूपरेखा तय करती है। इस क्षेत्र के लिए यह बोर्ड सर्वोच्च निर्णायक संगठन है और इसका गठन संसद द्वारा पारित एम.एस.एम.ई. एक्ट २००६ के अनुसार किया जाता है।

श्री बाहेती इंडियन फेडरेशन ऑफ टाइनी इंटरप्राइज के राट्रीय महामंत्री हैं और इस क्षेत्र में जागरूकता बढाने और उनके हितों की सुरक्षा के लिए समर्पित हैं।◆

बिहार सम्मेलन द्वारा 7800 सौ कम्बल का वितरण किया गया

इस वर्ष पूरे विश्व में बहुत कड़ाके की सर्दी पड़ी, तापमान में गिरावट ने अपने पिछले रिकॉर्डों को तोड़ दिया और ऐसे में हमारे सम्मेलन ने पूरे बिहार में तमाम शाखाओं एवं दान दाताओं की मदद से कम्बल वितरण का कार्य किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ७८०० सौ कम्बल बाँटे गये, जो पीड़ित मानवता के प्रति सच्ची सेवा है। इस कार्य में सर्वश्री सुशील बजाज, विजय किशोरपुरिया, मदन अग्रवाल, गोविन्द टिकमानी, बजरंग लाल मोटानी, कृण गुप्ता, राधेश्याम बंसल, अमर कसेरा, पवन खेमका, राजेन्द्र मित्तल, दिनेश अग्रवाल, श्याम रतन सुरेका, प्रो० विश्वनाथ अग्रवाल, संजय ड्रोलिया, राम निरंजन पोद्दार, रामावतार पोद्दार, शिव कु० पोद्दार–पटना एवं श्री दिनेश टिबड़ेवाल बेगूसराय का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। गुप्त दान भी प्राप्त हुआ है। साथ ही आरा, बक्सर, जमालपुर, लक्खीसराय, इशीपुर बाराहाट, बखरी बाजार, राघोपुर शाखा द्वारा कम्बल वितरण का कार्य किया गया।

दिनांक ३ जनवरी २०१० रविवार को कम्बल वितरण के प्रथम चरण का कार्य महाराणा प्रताप भवन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है।◆

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कानपुर शाखा द्वारा

प्रकाशित मारवाड़ी पंचाग पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, शाखा कानपुर द्वारा प्रकाशित मारवाड़ी पंचाग पत्रिका के द्वितीय पुप का प्रकाशन श्री नन्दकिशोर झाझरिया के कर कमलों द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी ने की। समारोह में मुख्य अतिथि श्री सोमप्रकाश जी गोयनका तथा विशिष्ठ अतिथि श्री रवीन्द्र पाटनी जी व श्री हनुमानप्रसाद तोषनीवाल थे।

संस्था के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमार तुलस्यान ने समारोह में पधारे सभी गणमान्य सदस्यों का अभिवादन करते हुए स्वागत किया। समारोह का संचालन संस्था के महामंत्री श्री सुनीलकुमार मुरारका द्वारा किया गया।

समारोह में सर्वश्री सत्येन्द्र माहेश्वरी, महेशकुमार भगत, संजीव झुनझुनवाला, आलोकचन्द्र कानोड़िया, हरिओम तुलस्यान, संजय अग्रवाल, महेशचन्द्र शर्मा, जयकुमार डालमिया, भजनलाल शर्मा, शिवरतन नेमानी, सुनीलकुमार केड़िया, सत्यनारायण नेवटिया, हनुमानप्रसाद कानोड़िया, राकेश पोद्दार, कमलेश गर्ग, सत्यनारायण सिंहानिया, अमित अग्रवाल, बालकृण शर्मा, सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।◆

अरूण राष्ट्रीय जेसीआई एवार्ड से सम्मानित

बलांगीर शहर के विशिष्ट उद्योगपति तथा अंबिका एग्रो इंडस्ट्रीज के सत्वाधिकारी श्री अरुण कुमार अग्रवाल को द्वितीय बार राष्ट्रीय जेसीआई एवार्ड से सम्मानित किया गया है।

बनारस में आयोजित ५४ वें राष्ट्रीय जेसीआई सम्मेलन में श्री अग्रवाल को श्रेष्ठ युवा उद्योगपति पुरस्कार से नवाजा गया. इससे पूर्व रायपुर में आयोजित जेसीआई जोनल सम्मेलन में भी उनको इसी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। ज्ञातव्य है की श्री अग्रवाल के नेतृत्व में अंबिका एग्रो इंडस्ट्रीज ने बलांगीर जिले में जैविक कपास की खेती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. कपास आधारित उद्योग के संचालक श्री अग्रवाल किसानों को कपास की बेहतर खेती एवं उसके अधिकतम् लाभ प्राप्त करने हेतु सदेव प्रयत्नशिल रहते हैं. उनके प्रयत्नों के फल स्वरूप जिले में कपास की खेती में उल्लेखनीय सुधार आया है।◆

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, होजाई शाखा

बौद्धिक विकास एवं खेलकूद प्रतियोगिता आयोजित

मारवाड़ी सम्मेलन की होजाई शाखा द्वारा ६१वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर समाज के बच्चों के लिए बौद्धिक विकास एवं खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन स्थानीय राजस्थान भवन में किया गया। प्रात १० बजे बौद्धिक विकास के तहत हिंदी कविता पठन ग्रुप ए में मयंक वोड़ा प्रथम, अमन केजड़ीवाल द्वितीय, स्नेहा दीक्षित व मयंक क्याल तृतीय, ग्रुप बी में वैभव क्याल प्रथम, मोहित क्याल द्वितीय, अंग्रेजी कविता पठन ग्रुप ए में प्रगति झुरिया, स्नेहा दीक्षित प्रथम, वैभव क्याल, प्रियंका सरावगी द्वितीय, मयंक क्याल, अमन भीमसरिया तृतीय, ग्रुप बी में मोहित क्याल प्रथम, निकुंज बेरीवाल द्वितीय तनु चनानी व रोनक केजड़ीवाल तृतीय स्थान पर रहे। चित्र पहचानो प्रतियोगिता में कुल ३६ बच्चों ने भाग लिया, जिसमें कमल कुमार दीक्षित, निकुंज बेरीवाल, अमन भीमसरिया, आंचल भीमसरिया, वैभव क्याल, मयंक क्याल, विशाल क्याल विजयी खेलकूद प्रतियोगिता के तहत म्यूजिकल चेयर में रजत भीमसरिया प्रथम, मोहित भीमसरिया द्वितीय, अमन भीमसरिया तृतीय, सांत्वना पुरस्कार यासना खाखोलिया व माही खाखोलिया को दिया गया। इसके अलावा हांड़ी फोड़ प्रतियोगिता में निखिल बेरीवाल व कृष बजाज प्रथम व द्वितीय स्थान पर, बालगेम में मयंक वोड़ा, निशू मोर, रानी बजाज, चेतन व नीरू शर्मा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। इसके साथ ही कई प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। बौद्धिक विकास के तहत सवाल हमारे जवाब आपके में बच्चों का प्रदर्शन देखते ही बनता था। बच्चों ने प्रश्नों का उत्तर देकर अपने लिए कई पुरस्कार बटोरे। तत्पश्चात् सायं चार बजे पुरस्कार वितरण समारोह संस्था के अध्यक्ष राधेश्याम चनानी की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ, जिसमें विशिट नागरिक बाबूलाल बेरीवाल, मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष प्रदीप सुरेका, शिवशंकर वोड़ा, सुरेश धुत, संस्था के उपाध्यक्ष निरंजन सरावगी, सचिव विनोद अगरवाल, सह सचिव विनोद सरावगी, मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय पदाधिकारी सुनील भीमसरिया सहित कई विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। उक्त समारोह में विजयी बच्चों को पुरस्कार दिया गया एवं अच्छे आचरण हेतु मोहित क्याल का सम्मान किया गया। वहीं कार्यक्रम में योगदान हेतु निखिल मुंदड़ा को पुरस्कार प्रदान किया गया। विनोद अग्रवाल ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु प्रवीण सरावगी, निखिल मुंदड़ा, विनोद सरावगी, सुरेश धुत का अपनी तरफ से विशेा आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन रमेश मुंदड़ा ने किया।◆

निवेदन

सेवा में,
महामंत्री महोदय,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152बी, महात्मा गाँधी रोड,
कोलकाता–700 007

महोदय,

❑ कृपया मेरे पते में निम्न सुधार करने की कृपा करें।

❑ कृपया मेरी सदस्यता शुल्क बकाया के संदर्भ में मुझे जानकारी दें ताकि मैं उसे जमा करा सकूँ।

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विशिष्ट/आजीवन/संरक्षक सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया निम्न पते पर मुझे एक सदस्यता फार्म डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

❑ विशिष्ट सदस्यता 500/–
❑ आजीवन सदस्यता 5000/–
❑ संरक्षक सदस्यता 51000/–

❑ मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रकाशित 'समाज विकास' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता हूँ। सदस्यता शुल्क 100/– चेक/मनि ऑडर/नगद द्वारा संलग्न।

मेरा वर्तमान पता निम्न है

नाम :.....
पता :.....
.....
शहर :.....
पिन कोड :.....
फोन नं. :.....
मोबाईल :.....
ई–मेल :.....

हस्ताक्षर

राजस्थान परिषद ने मनाया राजस्थान दिवस

कोलकाता, 28 मार्च। राजस्थान की विभिन्न नागरिक परिदों के केन्द्रीय संगठन राजस्थान परिषद द्वारा 61वां राजस्थान दिवस समारोह ओसवाल भवन में धूम–धाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ अधिवक्ता श्री सज्जन कुमार तुलस्यान ने की। इस अवसर पर परिषद द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली स्मारिका जो इस वर्ा महाराणा प्रताप के जीवन एवं कार्यों पर केन्द्रित थी, का लोकार्पण उदयपुर से पधारे प्रताप साहित्य के शोधकर्त्ता एवं इतिहासविद् डॉ. देव कोठारी के कर–कमलों से हुआ जिसे स्मारिका के सह–संपादक श्री महावीर बजाज ने उनके हाथों में प्रस्तुत किया।

प्रारंभ में प्रसिद्ध संगीतकार धरणीधर दाधीच ने धरती धोरां री गायन की संगीतमय प्रस्तुति कर सबका मन मोह लिया। तत्पश्चात् वरिष्ठ कवि डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी ने प्रताप की वन्दना में अपनी ताजा एवं प्रेरक रचना सुनाई जिसे सभी ने सराहा। परिषद के सभापति श्री शार्दूल सिंह जैन ने स्वागत भाषण किया एवं उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने राजस्थान दिवस का ऐतिहासिकता एवं प्रताप की प्रासंगिकता पर सारगर्भित वक्तव्य रखा।

विधायक श्री दिनेश बजाज ने कहा कि विगत स्वतन्त्रता दिवस पर कोलकाता महानगर में परिषद द्वारा महाराणा प्रताप की भव्य कांस्य प्रतिमा की स्थापना एक ऐतिहासिक कार्य हुआ है।

कार्यक्रम का संचालन श्री रूगलाल सुराणा जैन ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन परिषद के महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने किया।◆

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, April 2010
RNI Regd. No. 2868/68

S R RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, **Web Site:** www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

T/48/LM-687
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
14, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, BALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL